

अगस्त २००७

दादावाणी



तंत्री तथा संपादक :
दीपक देसाई
वर्ष: २, अंक : १०
अखंड क्रमांक : २२
अगस्त २००७

संपर्क सूत्र :
त्रिमंदि, सीमंथर सीटी,
अहमदाबाद-कलोल हाइ वे,
पो.ओ. : अडालज,
जि. : गांधीनगर-३८२४२१
फोन : (०७९)३९८३०१००
e-mail :
dadavani@dadabhagwan.org
अहमदाबाद : (०७९)
२७५४०४०८, २७५४३९७९
मुंबई : (०२२) २४१३७६१६
राजकोट त्रिमंदि :
९९२४३ ४३४१६
U.S.A. : 785-271-0869
U.K.: 020-8204-0746
Website : www.dadashri.org
www.dadabhagwan.org

Publisher, Owner & Printed by :
Deepak Desai on behalf of
Mahavideh Foundation
5, Mamtapark Society,
Bh. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad-14.
Printer/Press :
Mahavideh Foundation
Basement, Parshvanath
Chambers, Nr.RBI,
Usmanpura, Ahmedabad-14.

सबरिक्खण (सदस्यता फी)
१५ साल का
भारत : ८०० रूपया
यु.एस.ए. : १०० डॉलर
यु.के. : ७५ पाउन्ड
वार्षिक
भारत : १०० रूपया
यु.एस.ए. : 10 डॉलर
यु.के. : 7 पाउन्ड
भारत में D.D. / M.O.
'महाविदेह फाउन्डेशन' के
नाम से भेजे।

दादावाणी

दोष से विमुक्ति का उपाय - प्रतिक्रमण

संपादकीय

अति दुर्लभ ऐसे इस मनुष्य जीवन का क्या ध्येय होना चाहिए? सांसारिक ध्येय चाहे कुछ भी हो मगर आत्मध्येय तो सारे दोषों से मुक्त होकर मुक्ति मोक्ष प्राप्त करना ही होना चाहिए। दृष्टि निर्दोष करके दोष रहित होने का पुरुषार्थ करने का ध्येय नहीं भुलाना चाहिए।

हमारे दैनिक व्यवहार में, सांसारिक संबंधों में व्यवहार करते समय जाने-अनजाने में हम से हमारे घरवालों को, बुजुर्गों को, सगे-संबंधियों को, मित्रों को, आश्रितों को मन-वचन-काया से जो दुःख पहुँचाया जाता है। क्रोध-मान-माया-लोभ, राग-द्वेष के रूप में जो अतिक्रमण हो जाते हैं, इन अतिक्रमणों के कारण ही शुरू होती है कषायों और दुःखों की परंपरा! इन अतिक्रमणों से छूटने का और सुख-शांति व आत्यंतिक मुक्ति का उपाय क्या? अक्रम विज्ञानी ज्ञानीपुरुष दादा भगवान इसका रहस्य बताते हुए कहते हैं कि, 'मनुष्य से दोष होना स्वाभाविक है, पर उनसे विमुक्ति का केवल एक ही राजमार्ग है और वह है, प्रतिक्रमण।' यानी भूलें, दोषों से वापस लौटना। आजतक जहाँ उलटे चले हैं वहाँ अब सुलटा चलना, उसका नाम प्रतिक्रमण। यदि कपड़ों पर चाय का दाग पड़ जाये तो जैसे हम उसे तुरंत धो डालते हैं, वैसे हमारे अंतःकरण पर पड़ते दोष रूपी दागों को शूट ऑन साइट (तुरंत ही) प्रतिक्रमण से धोना जरूरी है। तभी आत्मा का सच्चा आनंद अनुभव में आता है।

ज्ञान प्राप्ति के पश्चात् हम शुद्धात्मा हुए पर यह पुद्गल (देह-फाइल नं-१) का छुटकारा तो होना ही चाहिए न? इसके लिए जब तक उससे प्रतिक्रमण नहीं करवाया जाये तब तक छुटकारा संभव नहीं है। दादाश्री कहते हैं कि इस प्रतिक्रमण के पंप का फोर्स ऐसा है कि उसके प्रयोग से पाँच आज्ञा पालन का फोर्स बढ़ता जायेगा। प्रतिक्रमण ही आपको ज्ञानजागृति की चरम सीमा तक पहुँचायेगा और दोषरहित होने पर एक दिन परमात्मा पद की प्राप्ति होगी।

जगत् अतिक्रमण से खडा हुआ है, जिसका प्रतिक्रमण से विसर्जन होता है। जब हम सर्व कषायों (क्रोध-मान-माया-लोभ-राग-द्वेष) और विषय विकारी दोषों का प्रतिक्रमण करके मुक्त होंगे तभी सही मानों में मुक्ति के अधिकारी होंगे। ज्ञानीपुरुष दादाश्री वाणी से, विचार से, तिरस्कार-दुतकार से, पकड़-आग्रहों से, मजाक उड़ाने से, शंका करने से, बैर रखने से होनेवाले अतिक्रमण के सामने यथार्थ प्रतिक्रमण करके दोषों से मुक्त होने की सही समझदारी कराते हैं। साधु-साध्वी, धर्म संबंधी या मृतकों का अवर्णवाद करने की जिम्मेदारी के सामने लालझंडी दिखाकर प्रतिक्रमण से हलके होने का मार्ग दिखलाते हैं। ज्ञान प्रकाश के पश्चात् चार सालों में दादाश्री ने घरवालों, मित्रों, सगे-संबंधीओं और सारे परिचितों के प्रतिक्रमण करके तमाम दोषों से मुक्ति पाई थी।

ज्ञानीपुरुष श्री दादा भगवान ने अपनी मौलिक वाणी में प्रतिक्रमण कैसे करना? कौन करें? सार्थक प्रतिक्रमण किसे कहलाये? प्रतिक्रमण कैसे किये जायें? आदि प्रश्नों के अद्भूत स्पष्टीकरण दिये हैं, जो प्रस्तुत 'दादावाणी' में संकलित किये गये हैं, जो सभी मुमुक्षुओं को अतिक्रमण दोषों से मुक्त होने में सहायक सिद्ध होंगे।

दीपक देसाई ...

पाठकों से...

‘दादावाणी’ सामायिक में मुद्रित पाठ्य सामग्री मूलतः गुजराती ‘दादावाणी’ का हिन्दी रुपांतर है। कोष्ठक में दिये गये शब्द या तो अंग्रेजी शब्द का अर्थ है अथवा शब्द का तात्पर्य स्पष्ट करने हेतु वृद्धित किये गये वाक्यांश है। यहाँ पर ‘आत्मा’ शब्द को गुजराती और संस्कृत की तरह पुल्लिंग में प्रयोग किया गया है। पाठक जहाँ पर भी चंदुभाई नाम का प्रयोग हुआ है, वहाँ पर खुद को समझें। ‘दादावाणी’ के इस अंक में अगर कोई बात आप समझ न पायें तो प्रत्यक्ष सत्संग में पधार कर समाधान प्राप्त करें। भाषांतर में कोई कमी नजर आये तो हमें सूचित करने की कृपा करें। ऐसी क्षतियों के लिये हम आपके क्षमाप्रार्थी हैं।

दोष से विमुक्ति का उपाय - प्रतिक्रमण

जीवन में करने योग्य...

प्रश्नकर्ता : मनुष्य को इस जीवन में प्रमुख रूप से क्या करना चाहिए?

दादाश्री : मन में जो हो ऐसा वाणी से बोलना, ऐसा वर्तन करना। हम वाणी से जो बोलते हैं और मन में उसके बारे में कुछ खराब हो तो उसके लिए प्रतिक्रमण करना पड़े। प्रतिक्रमण किसका करना? किसकी साक्षी में करना? तब कहे, ‘दादा भगवान’ की साक्षी में प्रतिक्रमण करें। ये दिखाई देते हैं, वे ‘दादा भगवान’ नहीं हैं। यह तो भादरण के पटेल हैं, ए. एम. पटेल हैं। ‘दादा भगवान’ तो जो अंदर प्रकट हो गये हैं, चौदह लोक के नाथ है, वह। यानी उनके नाम से प्रतिक्रमण करें कि, ‘हे दादा भगवान, मेरा मन बिगड़ा उसके लिए मैं माफ़ी चाहता हूँ। मुझे माफ़ करें।’ मैं भी उनके नाम से प्रतिक्रमण करता हूँ।

पछतावे से प्यारिटी

प्रश्नकर्ता : इस संसार में आए हैं तो कर्म तो करने ही होंगे न? जाने-अनजाने में गलत कर्म हो जाते हैं, तो क्या करना ?

दादाश्री : हो जायें तो उसका उपाय होता है न फिर! यदि गलत कर्म हो गया तो उसके बाद हमेशा तुरंत पछतावा होता है और पछतावा सच्चे दिल से, सिन्सियारीटी से करना चाहिए। पछतावा करने के बाद फिर से ऐसा हो जाये तो उसकी चिंता मत करना। फिर से पछतावा करना। उसके पीछे क्या विज्ञान है इसका खयाल आपको नहीं आयेगा, इसलिए आपको लगे कि ये पछतावा करने पर भी बंद नहीं होता है।

क्यों बंद नहीं होता यह विज्ञान है। इसलिए आप पछतावा करते ही रहना। सच्चे दिल से जो पछतावा करता है उसके सारे पाप धुल जाते हैं। बुरा लगा मतलब उसका पछतावा करना ही चाहिए।

उलटा चले उसके प्रतिक्रमण

हम सारे दिन में जो व्यवहार करते हैं, उसमें जब कहीं कुछ उलटा हो जाता है तो हमें पता चलता है कि इसके साथ उलटा व्यवहार हो गया, पता चले कि नहीं चले? यानी हम जो व्यवहार करते हैं वह सब क्रमण है। क्रमण यानी सामान्य व्यवहार। अब किसी के साथ कुछ उलटा हो गया ऐसा हमें पता चले कि इसके साथ मेरी जबान कड़क चली है या वर्तन उलटा हो गया, पता चले कि नहीं चले? तो वह अतिक्रमण हुआ कहलाये।

उलटे चले उसका नाम अतिक्रमण और सुलटे लौट आना उसका नाम प्रतिक्रमण।

प्रतिक्रमण यानी पाप से वापस लौटना

प्रतिक्रमण का अर्थ क्या यह आप जानते हैं?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : आप जैसा जानते हैं वैसा बताइये।

प्रश्नकर्ता : पाप से वापस लौटना।

दादाश्री : पाप से वापस लौटना। भगवान ने कैसा सुंदर न्याय किया है कि पाप से वापस लौटना उसका नाम प्रतिक्रमण। पर अभी भी पाप तो खड़े हैं, इसका क्या कारण?

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : वह तो आप ही समझाइये। आलोचना, प्रतिक्रमण और प्रत्याख्यान, ये तीन शब्द अभी मुझे पूर्ण रूप से स्पष्ट नहीं होते हैं।

दादाश्री : प्रत्याख्यान यानी में आज इस वस्तु को छोड़ देता हूँ, त्याग करता हूँ, ऐसा उसका भावार्थ है। वस्तु को छोड़ देना हो तो प्रत्याख्यान करता हूँ।

प्रश्नकर्ता : पछतावा करता हूँ वह प्रतिक्रमण और तय करें कि इसके अनुसार नहीं करूँगा वह प्रत्याख्यान?

दादाश्री : हाँ, पछतावा वह प्रतिक्रमण कहलाये। अब प्रतिक्रमण करने के बाद फिर से ऐसा अतिक्रमण नहीं हो, इसलिए 'अब फिर से ऐसा नहीं करूँगा', ऐसा कहना उसका नाम प्रत्याख्यान। फिर से नहीं करूँगा, इसके लिए प्रोमिस करता हूँ, ऐसा मन में तय करना और यदि फिर से ऐसा हो गया तो एक परत तो गई, फिर दूसरी परत आयेगी तो उसमें घबराना नहीं। हर बार यही करते रहना।

प्रश्नकर्ता : मन में माफ़ी माँग लेना।

दादाश्री : हाँ, माफ़ी माँग लेना।

हमें कोई गाली दे और असर हो तो अपनी ही भूल है, ऐसा खुद को लगता रहे और खुद उसके प्रतिक्रमण किया करे तो वह भगवान का सब से बड़ा ज्ञान है। यही ज्ञान मोक्ष में ले जाये। इतना शब्द, हमारे एक ही वाक्य (वचन) का यदि पालन करें न तो मोक्ष में चला जाये।

ऐसा होता है प्रतिक्रमण

अपने आप हो जाये वह अतिक्रमण और प्रतिक्रमण तो सिखना पड़े। किसी को मारना हो तो सिखने नहीं जाना पड़ता, वह तो किसी का देखकर सिखा हुआ ही होता है। अब अतिक्रमण करें तो प्रतिक्रमण करना पड़े। व्यवहार में सब साथ में बैठे हैं उसके लिए कोई प्रतिक्रमण करने की ज़रूरत नहीं है। मगर किसी को मारा हो या किसी का मजाक

उड़ाया हो, वह अतिक्रमण किया तो उसका प्रतिक्रमण करना पड़े।

प्रश्नकर्ता : वह प्रतिक्रमण कैसे करना?

दादाश्री : आपने यदि ज्ञान लिया हो तो उसके आत्मा का आपको पता चले, इसलिए आत्मा को संबोधित करके करना पड़े, वरना भगवान को संबोधित करके करना कि, हे भगवान, जो हुआ इसके लिए पश्चाताप करता हूँ, माफ़ी चाहता हूँ और अब फिर से ऐसा नहीं करूँगा। बस यही प्रतिक्रमण। गलत हुआ हो तो तुरंत मालूम हो जाये न?

प्रश्नकर्ता : हाँ जी।

दादाश्री : उसका प्रतिक्रमण किया मतलब धुल गया।

प्रश्नकर्ता : सचमुच धुल जाये वह?

दादाश्री : हाँ, हाँ, निश्चित रूप से धुल जाये। प्रतिक्रमण किया यानी नहीं रहता। बहुत बड़ा कर्म हो तो यों जली हुई रस्सी के समान दिखाई दे पर हाथ से छूते ही बिखर जाये।

प्रश्नकर्ता : पछतावा कैसे करना? सब के सामने करना कि मन में करना?

दादाश्री : मन में। मन में दादाजी का स्मरण करके कहना कि यह मेरी भूल हुई है, ऐसी भूल फिर से नहीं करूँगा, ऐसा मन में स्मरण करके करना ताकि ऐसा करते-करते वह सारा दुःख विस्मृत हो जाये। वह भूल टूट जाती है। पर यदि ऐसा नहीं करें तो भूलों में वृद्धि होती जाये। यह मैंने आपको प्रतिक्रमण रूपी बहुत बड़ा हथियार थमाया है, क्योंकि जगत् के बंधनों को काटने का सब से बड़ा हथियार यही है। अतिक्रमण से जगत् खड़ा हुआ है और प्रतिक्रमण से जगत् का विलय होता है। बस यही है। अतिक्रमण हुआ वह दोष हुआ इसका आपको पता चला यानी उस दोष को हमें 'शुट ऑन साइट' करना चाहिए। दोष दिखाई दिया कि तुरंत ही शूट करें (गोली दागें)।

दादावाणी

यह अक्रम मार्ग अकेला ही ऐसा मार्ग है कि जिस में खुद के दोष दिखाई दे और शूट होते जायें, ऐसा करते-करते दोष खतम होते जायें।

शूट ऑन साइट

कपड़े पर चाय का दाग पड़ते ही तुरंत उसे धो डालते हैं, ऐसा क्यों?

प्रश्नकर्ता : दाग तुरंत चला जाये इसलिए।

दादाश्री : वैसे अंदर दाग पड़ते ही धो डालना चाहिए। ज़रा-सा भी कषाय उत्पन्न हुआ, कुछ हुआ कि तुरंत धो डालने पर साफ ही साफ, सुंदर का सुंदर ही रहे।

अपना तो शूट ऑन साइट प्रतिक्रमण कहलाये। अपने तो सारे कपड़े धुलकर स्वच्छ हो गये। प्रतिक्रमण तो उसका नाम कहलाये कि कपड़े धुलकर स्वच्छ हो जायें।

जितने दोष दिखाई दें उतने कम हो जायें। इनको (नीरूबहन को) रोजाना पाँच सौ दोष दिखाई देते हैं। अब दूसरों को नहीं दिखाई देते, इसका क्या कारण? अभी कच्चा है उतना। कुछ दोष रहित थोड़े ही हो गया है, इसलिए नहीं दिखाई देते ऐसा नहीं है।

भगवान ने रोजाना बहीखाता लिखने को कहा था (मतलब दोष धोने को कहा था) और आज बारह महीने का बहीखाता एक दिन में लिखते हैं। जब पर्युषण पर्व आता है तब। भगवान ने कहा था सच्चा व्यापारी बनना और रोज का बहीखाता रोज लिखना और लेन-देन में कहाँ भूल हुई, कहाँ अविनय हुआ यह हिसाब लगाकर तुरंत ही प्रतिक्रमण करके उसे मिटा देना, और शाम को लेखा-जोखा निकालना। बारह महीने पर बहीखाता लिखते हैं फिर क्या याद होता है? उसमें कौन-सी रकमें याद होती हैं?

क्रमण, अतिक्रमण, प्रतिक्रमण

यह जगत् खड़ा कैसे हुआ? अतिक्रमण से।

क्रमण में कोई आपत्ति नहीं। हमने हॉटेल में जाकर कुछ मँगवाकर खाई और हमारे हाथों दो तश्तरियाँ टूट गई, तब उसके पैसे चुका कर बाहर आएँ, तो उसमें कोई अतिक्रमण नहीं हुआ है, इसलिए वहाँ प्रतिक्रमण करने को नहीं रहता। पर तश्तरियाँ हमारे हाथों टूटने पर कहें कि तेरे आदमी के हाथों टूटी है कि हो गई झंझट शुरू, मतलब अतिक्रमण हुआ उसका प्रतिक्रमण करना पड़े फिर। यानी अतिक्रमण हुए बगैर रहता नहीं है, इसलिए प्रतिक्रमण कीजिये। बाकी सब क्रमण ही है सारा, सहज रूप से होनेवाली बात क्रमण है, उसमें हर्ज नहीं है।

प्रश्नकर्ता : यह अतिक्रमण हुआ, ऐसा खुद को कैसे पता चले?

दादाश्री : अतिक्रमण हुआ वह सामनेवाले को भी मालूम पड़े और आपको भी मालूम हो जाये। क्योंकि उसके चेहरे पर असर हो गया होता है और आपको भी असर होता है। दोनों को असर होता है, इसलिए उसका प्रतिक्रमण करना ही चाहिए।

अतिक्रमण यानी क्रोध-मान-माया-लोभ आदि सब अतिक्रमण कहलाये। उसका प्रतिक्रमण किया मतलब क्रोध-मान-माया-लोभ गये। अतिक्रमण हुआ उसका प्रतिक्रमण करने पर क्रोध-मान-माया-लोभ चले जायें।

प्रतिक्रमण की परिभाषा

प्रश्नकर्ता : हमें पसंद नहीं आता ऐसा कुछ हो रहा है, उसे सह लेना उसे प्रतिक्रमण कहते हैं आप?

दादाश्री : नहीं। सहन नहीं करना चाहिए, प्रतिक्रमण करना चाहिए। प्रतिक्रमण यानी सामनेवाला हमारा अपमान करता है तो हमें समझ लेना चाहिए कि इस अपमान का गुनहगार कौन है? करनेवाला गुनहगार कि भुगतनेवाला गुनहगार है? इसका हमें पहले निर्णय करना चाहिए। इसमें अपमान करनेवाला

दादावाणी

कतई गुनहगार नहीं होता। वह तो निमित्त होता है और हमारे कर्मों के उदय को लेकर वह निमित्त आ मिलता है। इसलिए गुनाह हमारा ही है। अब प्रतिक्रमण इसलिए करना है कि उसके ऊपर खराब भाव होता है, इसके खातिर प्रतिक्रमण करना चाहिए। उसके लिए मन में 'वह नालायक है, लुच्चा है' ऐसा विचार आ जाये तो प्रतिक्रमण करना। और यदि ऐसा विचार नहीं आता और हम उसका उपकार मानें तो प्रतिक्रमण करना जरूरी नहीं है। बाकी कोई गाली दे तो वह हमारा ही हिसाब है, देनेवाला मनुष्य तो निमित्त है। जब कट जाये तो काटनेवाला निमित्त है और हिसाब हमारा ही है। यह निरंतर लक्ष में रखना है, पर लोग तो निमित्त को ही काटने को दौड़ते हैं और ये सारे झगड़े उसके ही हैं।

भूल नहीं वहाँ भुगतना नहीं

किसी को हम से किंचित्मात्र दुःख होता है तो समझना कि हमारी भूल है। हमारे भीतर परिणाम उपर-तले होने पर भूल हमारी है ऐसा समझ में आता है। सामनेवाला व्यक्ति भुगत रहा है इसलिए उसकी भूल तो प्रत्यक्ष है पर निमित्त हम हुए, हमने उसे डाँटा इसलिए हमारी भी भूल। क्यों दादाजी को नहीं भुगतना पड़ता? क्योंकि उनकी एक भी भूल नहीं रही है। हमारी भूल से सामनेवाले पर कुछ भी असर होता है, जो कुछ उधारी हो जाये तो तुरंत मन से माफ़ी माँगकर जमा कर लेना। हमारी भूल हुई हो तो उधार होता ही है, पर तुरंत ही केश-नगद प्रतिक्रमण कर डालना। और यदि किसी के द्वारा हम से भूल हो जाये तब भी हमें आलोचना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान कर लेना है। प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में मन-वचन-काया से माफ़ी माँगते रहना।

कदम-कदम पर जागृति रहनी चाहिए। हमारे में क्रोध-मान-माया-लोभ के कषाय हैं, वे भूलें करवायेंगे ही और उधारी खड़ी करते हैं। लेकिन उसके सामने हमें तुरंत ही, तत्क्षण माफ़ी माँगकर, जमा करावाकर,

स्वच्छ कर लेना चाहिए। इस व्यापार में पेन्डिंग (बाकी) नहीं रखा जाये। यह तो दरअसल रोकड़े का व्यापार है।

प्रश्नकर्ता : आज जो भूलें होती हैं, वे पिछले जनम की हैं?

दादाश्री : पिछले जनम के पापों को लेकर ही ये भूलें हैं। पर इस जनम में फिर भूलें मिटाता नहीं और बढ़ता जाये। भूलों को मिटाने, भूल को भूल कहना पड़ता है। उसकी तरफ़दारी नहीं की जाती। 'यह' ज्ञानी पुरुष की चाबी कहलाये। इससे चाहे कैसा भी ताला हो वह खुल जाता है।

यानी खुद की भूलें मिटाने पर काम होगा। या तो फिर ज्ञानी पुरुष आपको तारें तो बात बन जाये, ज्ञानी पुरुष तार सकते हैं। आप ऐसा कहें कि मुझे बचाइये, तो वे बचायें। उनको ऐसा नहीं है कि मुझे कोई फीस लेनी चाहिए। यह अमूल्य चीज कहलाये। इसलिए इसका कोई मूल्य नहीं होता। अमूल्य!

दोष तो हुए बगैर रहते ही नहीं न! निरे दोष ही होते रहते हैं। वे दोष आपको दिखाई दे। दोष दिखाई देते ही, उसका प्रतिक्रमण करना, पश्चाताप करना और फिर से ऐसा नहीं करूँगा, ऐसा प्रत्याख्यान करना। यह 'शूट ऑन साइट' कहलाये। दोष हुआ कि तुरंत उसे धो डालिये।

'वह' है पुरुषार्थ

किसी को किंचित्मात्र दुःख नहीं होना चाहिए। यह तो अनजाने में अपार दुःख होते हैं। सामनेवाले को दुःख नहीं हो ऐसे काम करे, वह क्रमण कहलाये, पर अतिक्रमण कब कहलाये? आप जल्दी में हैं और आपका ड्रायवर चाय पीने गया हो, उसके आने पर आप शोर मचा दें कि, 'कहाँ गया था? नालायक है' और ऐसा-वैसा सुनायें, वह अतिक्रमण किया कहलाये और ऐसा स्वाभाविक ही आप से हो जाये। ऐसा करने की आपकी इच्छा नहीं थी।

अहो! उसके भी प्रतिक्रमण

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण तो दूसरों के दोष दिखें, उसके ही करने चाहिए न?

दादाश्री : सिर्फ दूसरों के दोष के ही नहीं, हरएक बात को लेकर करने चाहिए। झूठ बोला गया हो, उलटा हो गया हो, जो कुछ हिंसा हुई हो, पाँच महाव्रतों में से किसी एक का भी भंग हुआ हो, उन सभी विषय को लेकर प्रतिक्रमण करने चाहिए।

अन्डरहेन्ड की न देखना भूल

प्रश्नकर्ता : दूसरों के दोष दिखाई देते हों और खुद के दोष दिखाई भी देते हों तो उन्हें देखा करना? और क्या-क्या करना?

दादाश्री : खुद के दोष दिखाई देते हों तो कुछ लोगों को बता देना चाहिए, कुछ लोगों को नहीं बताना चाहिए और कुछ लोगों के दोष दिखाई देने पर उसका प्रतिक्रमण करके निवारण करना, ऐसे तीन रास्ते हैं। या तो जो दोष दिखाई देते हैं उसका प्रतिक्रमण करके निवारण करना। अगर प्रतिक्रमण नहीं करे और दोष दिखाई देते हैं तब किसके दोष बताना? पुलिसवालों के, मेजीस्ट्रेटों के (जो अपने से ऊपर हो), उनके सारे दोष बताना कि आप सभी ऐसे हैं। लेकिन हमारे अन्डरहेन्ड (आश्रित) हैं, उनके दोष मत बताना।

हरएक वस्तु भूल से भरी हुई ही होती है। यानी सब की भूल तो होती है। बगैर भूल का तो कोई होता ही नहीं। किसी की भूल निकालना वह मूर्ख का काम है। तुझे भूल निकालना पसंद है?

प्रश्नकर्ता : दूसरे का दोष दिखाई दिया और वह जो भूल हुई, उसका प्रतिक्रमण करना पड़ेगा?

दादाश्री : लोगों का दोष दिखाई दिया कि हमें चंदुभाई से कहना पड़े, 'अहह! अभी भी आप दूसरों के दोष देखा करते हैं? उसका अब प्रतिक्रमण कीजिये।' इसे अपना दोष देखा कहलाये।

दूसरों के दोष देखने का अधिकार ही नहीं है, इसलिए उन दोषों का प्रतिक्रमण करना चाहिए। पराये दोष देखने की तो पहले की आदत ही थी। उसमें नया कुछ नहीं है। वह हेबिट (आदत) एकदम कहाँ छूटनेवाली है? वह तो प्रतिक्रमण से छूटे फिर। जहाँ दोष दिखाई दिये वहाँ देखते ही प्रतिक्रमण कीजिये, शूट ऑन साइट।

सम्यक्त्व से सही प्रतिक्रमण

प्रश्नकर्ता : शुद्ध प्रतिक्रमण किसे कहते हैं? सही प्रतिक्रमण कैसे होता है?

दादाश्री : सम्यक्त्व की प्राप्ति के बाद सही प्रतिक्रमण होता है। सुलटी दृष्टि होने के बाद, आत्मदृष्टि होने पर सही प्रतिक्रमण हो सके। लेकिन तब तक प्रतिक्रमण करे और पछतावा करे तो उससे दोषों की तीव्रता कम हो जाती है। आत्मदृष्टि नहीं हुई हो और जगत् के लोग गलत होने के बाद पछतावा करें और प्रतिक्रमण करें तो उससे पाप कम बँधते हैं। प्रतिक्रमण, पछतावा करने पर कर्म उड़ भी जायें।

उसकी रीति आनी चाहिए!

थोड़ी कच्चाई हो तो दूर करना। सामनेवाले मनुष्य को किंचित्मात्र दुःख नहीं होना चाहिए, इस ध्येय अनुसार का जीवन होना चाहिए।

दूसरों को दुःख पहुँचाने के लिए हम नहीं आए हैं, बन पाये तो सुख पहुँचाना, यह हमारा ध्येय है। और दुःख तो किसी को नहीं होना चाहिए। मतलब ना समझी से, हमारी भूल से ही सामनेवाले को दुःख पहुँचता है। उसकी भूल से हमें दुःख होता हो तो ऐसा भी नहीं होना चाहिए। उसकी भूल से यानी वह तो भूलवाला है ही, उसे आप सुधारने निकले हैं तो उसे दुःख पहुँचाये बगैर ही सुधारने का साहजिक प्रयत्न करना चाहिए।

शंका में से निःशंकता

प्रश्नकर्ता : सामनेवाले पर शंका नहीं करनी

दादावाणी

है, फिर भी शंका होती हो तो उसे कैसे दूर करना?

दादाश्री : वहाँ फिर उसके शुद्धात्मा को याद करके क्षमा माँगना, उसका प्रतिक्रमण करना। यह तो पहले भूलें की थी इसलिए शंका होती है।

प्रश्नकर्ता : हमारे कर्मों के उदय के कारण जो भुगतना पड़ता है वह प्रतिक्रमण करने से कम होता है?

दादाश्री : कम होता है। और 'हमें' भुगतना नहीं पड़ता। 'हम' चंदुभाई (जहाँ जहाँ चंदुभाई नाम का प्रयोग किया गया है वहाँ पाठक स्वयं को समझे) से कहें कि 'प्रतिक्रमण' कीजिए ताकि कम हो। जितना-जितना प्रतिक्रमण करें उतना वह कम होता जाये। फिर सही राह पर आ जायेगा।

यह तो कर्म के उदय से सब इकट्ठे हुए हैं। इसे अज्ञानी कुछ बदल सके ऐसा नहीं है और ज्ञानी भी बदल सके ऐसा नहीं है, तो हम क्यों दो नुकसान उठायें?

प्रश्नकर्ता : सही कहा कि यह जगत् पहले से ऐसा ही है।

दादाश्री : इसमें दुःख के सिवा और कुछ है ही नहीं। यह तो ढँका हुआ है इसलिए ऐसा लगता है और शंका ही मारती है। इसलिए शंका होने जैसा हो वह नहीं होने देना और प्रतिक्रमण करना।

किसी के लिए ज़रा-सा उलटा-सुलटा विचार आया कि तुरंत उसे धो देना। वह विचार यदि थोड़ी देर रहे तो सामनेवाले को पहुँच जाये और फिर उगे। चार घंटे, बारह घंटे या फिर दो दिन के बाद भी उगे, इसलिए स्पंदनों का बहाव उस ओर नहीं होने देना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : उसके लिए हम क्या करें?

दादाश्री : तुरंत ही प्रतिक्रमण करके मिटा देना। प्रतिक्रमण नहीं हो सके तो 'दादा' को याद

करके या आपके इष्टदेव को याद कर के संक्षेप में कह देना कि, 'यह विचार आता है वह ठीक नहीं है, वह मेरा नहीं है।'

करें निपटारा शंका का प्रतिक्रमण से

जंगल में जाने पर लौकिक ज्ञान के आधार पर ऐसे विचार आए कि, लुटेरे मिलेंगे तो क्या होगा? अथवा बाघ आ जायेगा तो क्या होगा? ऐसा विचार आते ही प्रतिक्रमण कर डालना। शंका हुई कि बिगड़ा। शंका मत होने देना। किसी भी मनुष्य के लिए, कोई भी शंका हुई तो प्रतिक्रमण करना। शंका ही दुःखदायी है।

शंका होते ही प्रतिक्रमण करवा लेना। हम इस ब्रह्मांड के स्वामी, हमें शंका क्यों होगी? हम जो मनुष्य ठहरे, इसलिए शंका तो होगी पर वह भूल हो गई है, इसलिए नगद (तुरंत) प्रतिक्रमण कर लेना।

जिसके लिए शंका हो उसका प्रतिक्रमण करना वरना शंका आपको खा जायेगी।

आर्त-रौद्रध्यान में से धर्मध्यान

प्रश्नकर्ता : कईबार ऐसा होता है कि हम आर्तध्यान और रौद्रध्यान में बहुत गहराई में घुसते जाते हैं, फिर भी हमें पता नहीं चलता तो उसे कैसे जाना जाये?

दादाश्री : वह तो दुःख हुआ मतलब आर्तध्यान हुआ ही है। और रौद्रध्यान में दुःख के साथ जलन होती है, अधिक मात्रा में दुःख होता है। आर्तध्यान-रौद्रध्यान सब मनुष्य के लिए दुःखदायी है। वह सब अशातावेदनीय ही है।

प्रश्नकर्ता : पर वे प्रति क्षण होते रहते हैं, उससे मुक्त होने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : उसे देखा करना है हमें, वास्तव में वह कुछ दोषी नहीं है। यह तो मेरे कर्मोदय से मुझे दिखता है पर यह बात वास्तव में ऐसी नहीं है। मतलब

दादावाणी

वह दोषी दिखाई दे तो वह निर्दोष है ऐसा कहते रहना और प्रतिक्रमण करते रहना।

हमें किसी मनुष्य के लिए बुरे विचार आए, इस पर हम हिसाब लगायें कि भैया, यह मेरे ही कर्म का उदय है, उसमें उस बेचारे का क्या कसूर? वह मेरा कर्मोदय है कहने से, वह दोषी दिखाई देना बंद हो जाये तो वह धर्मध्यान कहलाये। जहाँ रौद्रध्यान होनेवाला था वहाँ धर्मध्यान हुआ और वह अंदर बहुत आनंद कराये। मेरे ही कर्मोदय से वह दोषी दिखाई देता है, वह तो निमित्त मात्र है। वास्तव में सामनेवाला आज दोषी होता ही नहीं है, वह निमित्त ही होता है।

हमारे कषाय ही हमारे शत्रु

आपको निमित्त आता है कभी?

प्रश्नकर्ता : आता है, कभी-कभी...

दादाश्री : हाँ, वह तो निमित्त ही है, वास्तविक नहीं है। कोई चोर हमारी जेब में से रूपये निकाल लेता है, उसमें वह निमित्त है। वह वास्तव में गुनहगार नहीं है। वास्तव में गुनहगार हमारे कषाय हैं।

खुद के दुश्मन, खुद के कषाय ही हैं। अन्य कोई बाहरी दुश्मन है ही नहीं। और वे कषाय ही खुद को मार रहे हैं। बाहर का कोई मारता नहीं है।

पश्चाताप से ध्यान परिवर्तन

अब जबरदस्त रौद्रध्यान किया हो पर प्रतिक्रमण से वह आर्तध्यान हो जाता है। दो व्यक्तियों ने एक ही प्रकार का रौद्रध्यान किया हो। दोनों ने 'मैं फलाँ को मार डालूँगा' ऐसा किसी को मार डालने का भाव किया हो, वह रौद्रध्यान कहलाये। पर घर जाकर एक को पछतावा हुआ कि, 'मैंने ऐसा भाव क्यों किया?' यानी वह आर्तध्यान में परिवर्तित हो गया, जब कि दूसरे का रौद्रध्यान ही रहा।

यानी पछतावा करने पर रौद्रध्यान भी आर्तध्यान हो जाता है। पछतावा करने पर नर्कगति तिर्यँच गति

में परिवर्तित हो जाती है। और अधिक पछतावा करने पर धर्मध्यान बँधता है। एकबार पछतावा करने पर आर्तध्यान होता है और बार-बार पछतावा करने पर धर्मध्यान हो जाता है। मतलब क्रिया एक ही होती है पर परिवर्तन होता रहता है।

रौद्रध्यान होने पर पश्चाताप किया कि परिवर्तन होता जाये और आनंद व्यक्त किया कि, 'उसे तो मारना ही चाहिए। मैंने विचार किया वह बराबर था' ऐसा कहने पर वह निगोद तक पहुँचे। फिर से मनुष्य में आने में मुश्किल हो जाये वहाँ तक नीचे जाये। मतलब रौद्रध्यान का आनंद लेने पर वह निगोद तक पहुँच जाये।

मतलब रौद्रध्यान तो करना ही नहीं और रौद्रध्यान हो जाये तो पश्चाताप करना। आर्तध्यान करना ही नहीं और आर्तध्यान हो जाये तो पश्चाताप करना।

प्रतिक्रमण से पुद्गल पाये धर्मध्यान

'दादा' के नाम से पछतावा करना तो वहाँ पर आर्तध्यान-रौद्रध्यान का धर्मध्यान हो जायेगा। जितना आया उतना तो आगे बढ़ा। रौद्रध्यान हो जाये तो भी पछतावा करना और आर्तध्यान हो जाये तो भी पछतावा करना। धर्मध्यान करना तो आए ऐसा नहीं है इस काल में इसलिए इन रौद्रध्यान और आर्तध्यान का पछतावा करके धर्मध्यान कर देना। इस काल में आज मनुष्यों को धर्मध्यान सीधे रूप से आए ऐसा नहीं है। क्योंकि भगवान के दर्शन करते समय ध्यान बहार जूतों में होता है। इसलिए भगवान खुद कहते हैं, कि जब मेरे दर्शन करते हैं तब साथ में जूतों के दर्शन भी करते हैं यानी साथ में जूतों की भी फोटो खींचते हैं। इसका मैं क्या करूँ फिर?

यानी इस काल में धर्मध्यान नहीं हो सकता। इसलिए दादाजी क्या कहते हैं, जितने भी आर्तध्यान होते हैं उनका पछतावा कीजिये तो धर्मध्यान का फल मिलेगा। बिना धर्मध्यान के पुद्गल छूटनेवाला नहीं है।

दादावाणी

इस पुद्गल को कभी भी शुक्लध्यान (आत्मध्यान) नहीं होनेवाला।

यानी आर्तध्यान होता है तो उसमें आपत्ति नहीं है, उसे धर्मध्यान में परिवर्तित किया जा सकता है। हम कहें, 'चंदुलाल, तुम किसके खातिर आर्तध्यान किया करते हो? अब आर्तध्यान किया उसका पछतावा करो, प्रतिक्रमण करो।' मतलब धर्मध्यान हो गया।

प्रश्नकर्ता : 'हम' खुद अलग रहकर प्रतिक्रमण करवायें तो वह क्या हुआ कहलाये?

दादाश्री : ऐसा है न, हम शुद्धात्मा हो गये, पर इस पुद्गल का छुटकारा होना चाहिए न? इसलिए जब तक उसके पास प्रतिक्रमण नहीं कराओगे तब तक छुटकारा नहीं होगा। जब तक पुद्गल को धर्मध्यान में नहीं रखेंगे तब तक छुटकारा नहीं होगा। क्योंकि पुद्गल को शुक्लध्यान होता नहीं है, इसलिए पुद्गल को धर्मध्यान में रखिये। इसके लिए प्रतिक्रमण करवाते रहना। जितनी बार आर्तध्यान हो जाये उतनी बार प्रतिक्रमण करवाना।

आर्तध्यान होना वह पूर्व की अज्ञानता है। अगर हो जाये तो 'हमें' उसके पास प्रतिक्रमण करवाना।

प्रश्नकर्ता : गलत करनेवाला अलग है फिर प्रतिक्रमण क्यों करना?

दादाश्री : अलग है ऐसा नहीं, खुद नहीं करता। गलत करनेवाले के पास प्रतिक्रमण करवाता है। शुद्धात्मा खुद प्रतिक्रमण नहीं करता।

कषायों की माफ़ी मंगवाये, खुद के पास

ताँता (गुस्सा होने के बाद भी अपनी पकड़ पकड़े रहना) और हिंसकभाव, ये दोनों होने पर वह क्रोध कहलाये, कषाय कहलाये, यह तीर्थकर भगवान की बतायी हुई बात है।

फिर भी यदि गुस्सा होने लगे, किसी को बहुत दुःख हो जाये ऐसा बोला गया हो, तो हम चंदुभाई

से कहें कि, 'चंदुभाई, ज़रा सीधे रहिये न? और प्रतिक्रमण करो, पश्चाताप करो। क्यों ऐसा किया?' कह सकते हैं कि नहीं कह सकते?

प्रश्नकर्ता : कह सकते हैं, कहना ही चाहिए।

दादाश्री : चंदुभाई भले ही गवर्नमेन्ट के बड़े ऑफिसर हो पर यदि किसी को ज्यादा दुःख हो गया हो तो, वहाँ उनकी शर्म नहीं रखनी चाहिए। (चंदुभाई के पास प्रतिक्रमण करवाना चाहिए।) क्रमण का एतराज नहीं है, अतिक्रमण का एतराज है। यानी अतिक्रमण हो जाये तो सरकार भी उसे गुनाह मानती है। ये सब सामान्य रूप से बोलते हैं उसमें एतराज नहीं है। पर नई तरह का, तृतीयम् बोले और सभी के मन में ऐसा हो कि, अरे! ऐसा कैसा बोलते हैं? वह अतिक्रमण कहलाये। जिसका इरादा चोर हो वह अतिक्रमण कहलाये। नीयत बुरी हो वह अतिक्रमण कहलाये।

ताँता नहीं रहा तो समझना कि यह क्रोध-मान-माया-लोभ अब नहीं रहे। आप शुद्ध हो गये, अब आप ज्ञाता-द्रष्टा, परमानंदी। 'चंदुभाई' क्या करते हैं, उसे देखा करना। चंदुभाई का चलायेगा कौन? 'व्यवस्थित' नाम की शक्ति चलायेगी और बहुत अच्छा चलेगा।

आपको गुस्सा आया और सामनेवाले मनुष्य के लिए दुःखदायी हो पड़े तो खुद जो 'शुद्धात्मा हूँ' ऐसा मानते हैं पर जिसने अतिक्रमण किया है, उसके पास प्रतिक्रमण करवाईये। यानी अतिक्रमण करनेवाला चंदुभाई, इसलिए आपको चंदुभाई से कहना पड़े कि प्रतिक्रमण कीजिये। आपको खुद को नहीं करना है।

अब क्रोध-मान-माया-लोभ नहीं होनेवाले, पर बेटी के साथ एकदम से लाल-पीले हो गये हो तो आप चंदुभाई से कहें कि, 'इतने लाल-पीले क्यों हो जाते हैं? बेबी को कितना बुरा लगे! अंदरूनी तौर पर माफ़ी माँग लो। बेबी को मुँह पर नहीं कहना है। अंदर से माफ़ी माँग लो, और फिर से ऐसा मत करना अब।'।

दादावाणी

यदि हमने कोई किच-किच या दुःख हो ऐसा कुछ नहीं किया हो तो माफ़ी नहीं माँगनी है।

वाणी से अधिक कर्मबंधन

मन का इतना एतराज नहीं है, जितना वाणी का है। क्योंकि मन तो गुप्त रूप से चलता है, पर वाणी से तो सामनेवाले की छाती पर प्रहार होता है। इसलिए इस वाणी से जिन-जिन मनुष्यों को दुःख पहुँचाये हैं उन सभी की क्षमा चाहता हूँ, ऐसा कहकर प्रतिक्रमण कर सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण से वाणी के वे सारे दोष माफ़ हो जायेंगे न?

दादाश्री : दोष खड़े रहें, मगर जली हुई रस्सी समान रहें ताकि अगले भव में केवल छूने से ही बिखर जायें सारे, प्रतिक्रमण के कारण। उसमें से रसकस उड़ जाये सारा।

कर्ता का आधार होने पर कर्म बंधता है। अब आप कर्ता नहीं है इसलिए पिछले कर्म जो थे, वे फल देकर जायें। नये कर्म बंधते नहीं है।

प्रश्नकर्ता : पर दादाजी, सामनेवाले मनुष्य पर 'इफेक्ट' क्या होता है फिर?

दादाश्री : प्रतिक्रमण करने के बाद हमें उसे नहीं देखना है। प्रतिक्रमण ज्यादा करते रहना।

प्रश्नकर्ता : मान लीजिये कि जबान से निकल गया, मतलब मेरी ओर से दुःख हुआ कहलाये न?

दादाश्री : हाँ, वह दुःख तो हमारी इच्छा विरुद्ध हुआ, इसलिए हमें प्रतिक्रमण करना है। उसका हिसाब होगा जो चुकता हो गया।

प्रश्नकर्ता : हम कुछ कहें तो उसको मन में बहुत बुरा भी लगे न?

दादाश्री : हाँ, वह तो बुरा लगे। गलत हुआ हो तो बुरा लगे। हिसाब चुकता करना हो वह तो

चुकता करना ही पड़े। उसमें छुटकारा नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : अंकुश नहीं रहता इसलिए वाणी द्वारा निकल जाता है?

दादाश्री : हाँ, वह तो निकल जाये, पर निकल जाये उसके लिए हमें प्रतिक्रमण करना है, बस और कुछ नहीं। पश्चाताप करना और फिर से ऐसा नहीं करूँगा, ऐसा तय करना चाहिए।

फिर फुरसत मिलने पर उसके प्रतिक्रमण करते ही रहना ताकि सब नरम पड़ जाये। जो-जो कठिन फाइलें हैं उतनी ही नरम करनी हैं। यानी दो-चार फाइलें कठिन होती हैं, ज्यादा नहीं होती।

अतिक्रमण और आक्रमण

एक अतिक्रमण और दूसरा आक्रमण। प्रतिक्रमण इन दो शब्दों के करने होते हैं। आक्रमण वस्तु हमारे में नहीं होनी चाहिए। आक्रमण यानी अटेकिंग नेचर (आक्रमक स्वभाव)। आक्रमण यानी बात-बात में शब्दों से भी अटेक (हमला) कर दें। शब्दों से अटेक हो जाये, वह अटेकिंग नेचर कहलाये, आक्रमण कहलाये।

अतिक्रमण और आक्रमण में क्या अंतर?

प्रश्नकर्ता : आक्रमण यानी सीधा अटेक ही हुआ?

दादाश्री : हाँ, अटेक ही बस। हमला करना, आक्रमण। और क्रमण माने क्या? तब कहे, व्यावहारिक बातें चलती हो ऐसे बातें किया करें और किसी को दुःख नहीं पहुँचा तो हम समझें कि क्रमण कहलाये। ज़रा-सा ही किसी का 'जोक' (मज़ाक) किया हो और सामनेवाला ज़रा कच्चा हो और बर्दाश्त कर लेता हो पर उसे अंदर दुःख पहुँचे तो वह अतिक्रमण किया कहलाये। हम सब के साथ 'जोक' किया करते हैं। मगर वह कैसा? निर्दोष 'जोक' करते हैं। हम तो उसका रोग निकालकर उसे शक्तिमान बनाने के लिए

दादावाणी

‘जोक’ करते हैं। थोड़ी गम्मत हो, आनंद आए और उसकी प्रगति होती जाये। ऐसा ‘जोक’ किसी को दुःख नहीं पहुँचाता।

बैर छूटे, आत्मानंद से

ऐसा है, यह ज्ञान आपको मिला फिर वह बैर वसूल करे, यानी किसका बैर वसूल करे? बैर का बैर वसूल करे। फिर आत्मस्वरूप में बैर नहीं लेते। आत्म रूप में आप जानेंगे कि यह बैर लेता है पर तब भी हल निकल आयेगा। यह ज्ञान प्राप्त होने के बाद यदि सौ बैरी होंगे तो भी निपटारा हो जायेगा। जिसे ज्ञान प्राप्त नहीं हुआ हो वह तो एक ही बैरी होने पर भी फिर से कितने ही बैर के बीज बो दे। ज्ञान के बाद अब बैर के बीज नहीं पड़ते। कर्म ‘चार्ज’ नहीं होते, कर्म बँधते ही नहीं।

भगवान ने कहा था कि, ‘इस जनम में तू नया बैर बढ़ाना नहीं और पुराना छोड़ देना।’ पुराना बैर छोड़ने पर शांति होती है न! वर्ना हमारे लोग तो पहले मूँछ मरोडते जायें और बैर बढ़ाते जायें। पर अब बैर बढ़ाना नहीं है, दिन-ब-दिन कम करते जाना है। इस ‘दादा’ का कोई बैरी नहीं है, क्योंकि बैर का निपटारा करके आए हैं। सारे बैर का निपटारा करके इस भव में आए हैं, ये इस भव में अब बैर को बढ़ाना नहीं।

अब बैर कब छूटे? खुद को आनंद रहे तब। आनंद कैसा? आत्मा का आनंद, वह पौद्गलिक आनंद नहीं। पुद्गल के आनंद में बैर बढ़ता जाये और ज्ञानी पुरुष के पास सत्संग में वह आत्मा का आनंद अंदर उत्पन्न होने के बाद सारे बैर छूट जायें।

द्वेष होने पर प्रतिक्रमण

यह तो जंजाल है सारा। आपको जिसके लिए जितने भी खराब विचार आए उतने प्रतिक्रमण करते करना। जब कभी कोई उलटे विचार आए तो उसके प्रतिक्रमण करते रहना, बस। उसे मिटा देना तुरंत। प्रतिक्रमण करने से हमारे अटेक संबंधी विचार बंद

हो जाते हैं, इसलिये फिर मन में द्वेष नहीं आता। जिसके लिए मन अकुलाता हो उसके प्रतिक्रमण करने से मन का अकुलाना बंद हो जाता है फिर।

अरे! वाणी के घाव तो एक जनम नहीं, सौ-सौ जनमों तक भी भरते नहीं है। इसलिए हम कहते हैं न कि किसी का तिरस्कार हो ऐसा बोलने पर तो भवोभव के लिए बैर बंधे, फिर क्या दशा होगी तुम्हारी? एक ही जीव ऐसा निकले और ठान ले कि मेरा जो होना हो सो हो पर इसे मोक्ष में नहीं जाने दूँगा। खुद को ही पूर्ण रूप से दाँव पर लगा दे, तो मोक्ष में नहीं जाने दे। क्योंकि बैर का स्वभाव ऐसा है, दाँव पर लगा दे, सत्ता में ही घुसेड़ दे और मोक्ष में नहीं जाने दे और खुद भी नहीं जाये। जीवन जीना ही नहीं आता तो क्या करें? जीवन जीना वह तो बहुत बड़ी कला है। जिसे हम अकेले ही सिखलाते हैं। अन्यत्र कहीं भी जीवन जीने की कला नहीं होती है।

देखिये न, जीवन है इसलिए लड़े-करें... आमने-सामने लड़ें ही। वैसे बाहरी लड़ाई नहीं करें, वे अंदरूनी लड़ाई करनेवाले। बाहरी लड़ाई तो एकावतारी होती है। एक अवतार में वह शून्यता को प्राप्त होती है और अंदर की लड़ाई तो सौ-सौ जन्मों तक चलती रहे।

प्रश्नकर्ता : कईबार ऐसा प्रश्न होता है कि भगवान से माफ़ी माँगते हैं, पूजा करते हैं, वह किस लिए?

दादाश्री : वह तो दुनिया के साथ जो गुनाह हुए थे, उनकी माफ़ी माँगते हैं। जिसने गुनाह नहीं किया है, उनको माफ़ी किस लिए माँगनी चाहिए? आपकी समझ में आया?

अंडरहैन्ड को झिड़काने के प्रतिक्रमण

प्रश्नकर्ता : नौकरी के दौरान फर्ज अदा करते समय मैंने बहुत सख्ती के साथ लोगों के अपमान किये थे, उन्हें दुत्कारा था।

दादावाणी

दादाश्री : उन सभी का प्रतिक्रमण करना। उसमें आपका बद इरादा नहीं, आपके अपने लिए नहीं पर सरकार के लिए ऐसा किया था। वह सिन्सियारिटी (ईमानदारी) कहलाये।

प्रश्नकर्ता : उस हिसाब से मैं बहुत बुरा आदमी था, कईयों को दुःख हुआ होगा न?

दादाश्री : उसका तो आप साथ में प्रतिक्रमण कर लेना कि मेरे यह स्वभाव को लेकर, कड़क स्वभाव को लेकर जो-जो दोष हुए हैं, उसकी क्षमा माँगता हूँ। अलग-अलग से नहीं करना।

प्रश्नकर्ता : इकट्ठा प्रतिक्रमण करना क्या?

दादाश्री : हाँ, आप ऐसा करना कि, 'यह मेरे स्वभाव को लेकर सरकार का कार्य करने में जो-जो दोष हुए हैं, लोगों को दुःख पहुँचे ऐसा किया है, उसकी क्षमा चाहता हूँ।' ऐसा प्रतिदिन बोलकर प्रतिक्रमण करना।

सामूहिक प्रतिक्रमण

प्रश्नकर्ता : हम जो प्रतिक्रमण करते हैं, उसमें जो-जो दोष हुए हों, उन्हें याद करके, हम क्षमा माँगते हैं। दोष तो अनेकों होते हैं और उनमें से बहुत सारे हम भूल गये होते हैं, तो उनकी याद ताजा करके दुःखी क्यों होना चाहिए?

दादाश्री : वह दुःखी होने के लिए नहीं है। बहीखाता जितना शुद्ध हुआ, उतनी शुद्धि हुई। आखिर आपको वह बहीखाता तो शुद्ध करना पड़ेगा। फुरसद के समय में घंटाभर उसके लिए निकालने में आपका क्या बिगड़ जाता है?

प्रश्नकर्ता : दोषों की लिस्ट तो बहुत लम्बी हो जाती है मगर?

दादाश्री : लिस्ट लम्बी हो जाये तो, ऐसा मानिये न कि एक व्यक्ति के साथ सौ तरह के दोष हो गये हों तो उसका सामूहिक प्रतिक्रमण कर

डालना कि इन सभी दोषों की मैं आपके पास माफ़ी माँगता हूँ।

मज़ाक उड़ाना वह तो बहुत बड़ा जोखिम

मैंने तो लोगों का हर तरह से मज़ाक उड़ाया था। हमेशा हर तरह का मज़ाक कौन उड़ाता है? जिसका बहुत टाइट ब्रेइन (तेज दिमाग) हो वही उड़ाये। मैं तो सब का मज़ाक उड़ाया करता था, अच्छे-अच्छे लोगों का, बड़े-बड़े वकील, डॉक्टरों का मज़ाक किया करता था। अब वह सारा अहंकार तो गलत ही है न? ऐसे हमारी बुद्धि का दुरुपयोग किया। मज़ाक उड़ाना यह बुद्धि की निशानी है।

प्रश्नकर्ता : मुझे तो अभी भी मज़ाक करने का मन हुआ करता है।

दादाश्री : मज़ाक करने में बहुत जोखिम है। बुद्धि से मज़ाक करने की शक्ति होती ही है और उसका जोखिम भी उतना ही है फिर। यानी हमने वह जोखिम मोल लिया था, जोखिम ही मोल लेते थे।

प्रश्नकर्ता : मज़ाक करने में क्या-क्या जोखिम हैं? किस तरह के जोखिम हैं?

दादाश्री : ऐसा है न, कि किसी को थप्पड़ मारा हो और जो जोखिम आता है, उससे अनंत गुना जोखिम मज़ाक करने में है। उसकी बुद्धि पहुँचती नहीं है इसलिए आपने अपने लाइट (बुद्धि) से उसे अपने कब्जे में लिया। यानी फिर वहाँ भगवान कहेंगे, 'इसकी बुद्धि नहीं है उसका यह मज़ा लेते हैं?' वहाँ पर खुद भगवान को हमने विपक्षी बनाया। उसे थप्पड़ मारा होता तो वह समझ जाता, ताकि खुद मालिक होता, लेकिन यह तो बुद्धि पहुँचती नहीं है, इसलिए हम उसका मज़ाक उड़ाये, तब वह खुद मालिक नहीं होता। इस पर भगवान जाने कि, 'अहह! इसकी बुद्धि कम है उसे तू फँसाता है? आज, मैं तेरी खबर लूँ।' वे तो फिर हमारा पुरजा-पुरजा ढीला कर दें।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : हमने तो मुख्य रूप से यही धंधा किया था।

दादाश्री : पर अभी भी उसके प्रतिक्रमण कर सकते हैं। हमने भी वही किया था। और वह मज़ाक उड़ाना बहुत गलत बात! मेरे लिए तो वही झंझट खड़ी हुई थी। उस बुद्धि को अंतराय हो रहा था तो क्या करे? बलवा तो करेगी ही न? मतलब यह ज्यादा बुद्धि हुई उसका इतना बड़ा गेरलाभ न? इसलिए इन मज़ाक करनेवालों को बिना लिए-दिये यह दुःख भुगतना नसीब हुआ।

कोई लँगडाता हुआ चलता हो और उस पर हम यदि हँसे, मज़ाक उड़ाये, तो भगवान कहेंगे, 'लो यह फल भुगतो।' इस दुनिया में किसी प्रकार का मज़ाक मत उड़ाना। मज़ाक करने के कारण ही ये सारे दवाखाने खड़े हुए हैं। ये पैर-बैर आदि सारे जो लूले-लंगड़े अंगड-बंगड माल है न, वह मज़ाक का ही फल है। हमें भी यह मज़ाक का फल मिला है। (दादाजी को फ्रेक्चर होने के बाद एक पैर में खोट थी।)

इसलिए हम कहते हैं न कि, 'मज़ाक करना वह बहुत बुरी बात कहलाये, क्योंकि मज़ाक भगवान का उड़ाया कहलाये। भले ही गधा है, पर आफ्टर ऑल (आखिर) क्या है? भगवान है।' हाँ, आखिर तो भगवान ही है। जीवमात्र में भगवान ही बिराजमान है। मज़ाक किसी का नहीं कर सकते। हमारे हँसने पर भगवान कहे कि, 'हाँ आ जा, अब तेरा हिसाब बराबर कर देता हूँ इसबार।'

प्रश्नकर्ता : अब उसके उपाय के लिए प्रतिक्रमण तो करने ही पड़े न?

दादाश्री : हाँ, करने ही पड़े। उसके सिवा छुटकारा ही नहीं है।

प्रश्नकर्ता : 'दादाजी' आपकी साक्षी में जाहिर करके माफ़ी माँगकर, प्रतिक्रमण करता हूँ कहे तो?

दादाश्री : 'दादाजी, आपकी साक्षी में' बोलो न, तो भी चलेगा। 'यह वाणी दोष के कारण जिन-जिन लोगों को दुःख हुआ हो उन सभी की क्षमा माँगता हूँ।' तो उसको पहुँच जाये।

उससे अलग होता जाये

प्रश्नकर्ता : कुछ जो पकड़ें पकड़कर रखी हों, हमें ज्ञात है कि वह गलत है, ऐसा नहीं होना चाहिए। इच्छा नहीं होने के बावजूद उसकी पकड़ में आ जाते हैं। फिर पछतावा होता है, प्रतिक्रमण होता है, फिर भी वे पकड़े क्यों छूटती नहीं है?

दादाश्री : यदि प्रतिक्रमण करें तो छूट जायें। जैसे जैसे उनके प्रतिक्रमण करते जायें वैसे-वैसे अलग होती जायें। जितने प्रतिक्रमण करें उतनी अलग होती जायें।

प्रश्नकर्ता : फिर दादाजी की फोटो के पास आकर रोऊ भी सही।

दादाश्री : हाँ, मगर जितने प्रतिक्रमण करें उतने अलग हुए। एक प्रतिक्रमण किया और दोष को धक्का दिया। दूसरा प्रतिक्रमण किया तब और धक्का दिया। इस तरह जितना अलग होता जाये उतना कम होता जाये। इस बहनजी को अब तीन महीने में एकबार ही घर में झंझट होती है। पहले दिन में तीन-चार बार किया करती थीं यानी नब्बे दिन में तीन सौ साठ बार करती थीं उसके बजाय एक ही बार करती हैं, ऐसा आपका भी हो जायेगा। इनकी तरह एक दूसरी बहन भी घर में रोज़ टंटा किया करती थी। उलटा ही बोला करती थी, उसे प्रतिक्रमण करने से ही जुदापन महसूस होने लगा। अब वह हररोज प्रतिक्रमण करती है।

प्रश्नकर्ता : इस संसार की एक भी चीज़ का उपभोग नहीं करना है ऐसा निश्चय है, पर जब अंदर से ऐसी इच्छा होने पर उसके अनुसार वर्तन हो जाता है, तो इसका क्या करना?

दादावाणी

दादाश्री : तो उसका प्रतिक्रमण करना। माफ़ी माँगना कि नई इच्छाएँ नहीं होने के बावजूद यह गुनाह किया, इसके लिए क्षमा चाहता हूँ। फिर से नहीं करूँ, ऐसी शक्ति देना।

माँ-बाप का विनय-विवेक न छोड़ें

प्रश्नकर्ता : माँ-बाप के साथ जो विनय-विवेक रखना चाहिए वह नहीं रहता, क्या करूँ?

दादाश्री : ऐसा नहीं होना चाहिए, यह गलत कहलाये। सौ फ़िसदी गलत है, ऐसा नहीं चला सकते। वर्तन विनयी और ऊँचा होना चाहिए। माँ-बाप का उपकार कैसे भुलाया जाये? माँ-बाप का उपकार नहीं भूल सकते।

प्रश्नकर्ता : कईबार वे ऐसे शब्द बोलते हैं कि मुझे बहुत आघात लगता है। यानी इससे फिर मुझे सारा दिन घबराहट होती है और कहीं चैन नहीं पड़ता, इसका क्या करना?

दादाश्री : मधर जो बोले, वह टेपेरेकड (दादाश्री मुँह से वाणी निकलती है उसे टेपेरेकड कहते हैं) बोलता है ऐसा नोट नहीं करता क्या? ज्ञानपूर्वक नोट करना चाहिए। यहाँ ऐसा नहीं चलनेवाला, मार डालें तो मर जाना चाहिए, पर माँ-बाप के प्रति विनय-विवेक नहीं तोड़ सकते।

प्रश्नकर्ता : मैं स्वीकार करता हूँ कि एक बेटे के तौर पर मेरा विनय-विवेक बराबर नहीं है, पर संयोग ऐसे आते हैं कि जबान चल जाती है। मेरी इच्छा नहीं होती पर जबान चल जाती है। उसका प्रतिक्रमण भी करता हूँ पर कभी-कभी जबान रूक नहीं पाती, तो क्या करूँ?

दादाश्री : वह तो तुरंत माफ़ी माँग लेना। जबान चल जाये, पर हमारा 'ज्ञान' जो है वह हाज़िर हो जाये, कहीं पर भूल हुई कि तुरंत माफ़ी माँग लेनी चाहिए कि यह जबान चल गई, वह भूल हो गई। मम्मी से कहना, 'अब ऐसी भूल नहीं करूँगा।' यह

तो मुझे बुरा लगे क्या हमारी तालीम ऐसी होगी? हमारे मन में प्रश्न उठे ऐसा! बाहरवालों को त्रस्त नहीं करना है वहाँ घरवालों के साथ ऐसा सलूक?

प्रश्नकर्ता : दादाजी के जो आज्ञाधीन हैं, उनके घरों में तो वातावरण एकदम प्रफुल्लित होना चाहिए। पर यह तो कहता है कि उसको दिमाग पर कायम बोझ-सा रहा करता है!

दादाश्री : यह तो इस समय विनयधर्म की बात करता है। तुझे कैसा विनयधर्म रखना चाहिए?

बाहर तो होना ही चाहिए पर घर में कैसा होना चाहिए?

प्रश्नकर्ता : आदर्श होना चाहिए।

दादाश्री : यानी तेरी जबान चल जाती है, शब्द निकल जाते हैं, इस पर से कहते हैं कि उसके पीछे जागृति, हमारा ज्ञान होता है इसलिए तुरंत माफ़ी माँग लेना ताकि उनको घाव नहीं लगे।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादाजी की उपस्थिति में क्षमा माँगता हूँ।

दादाश्री : बस, हो गया तेरा काम।

तिरस्कार अंत में भगवान का ही

हमारे घर के सभी को, पत्नी को, छोटी बेटा को, किसी को भी दुतकार कर मोक्ष में नहीं जा सकते। ज़रा-सी भी दुतकार होती है, वहाँ मोक्ष का मार्ग नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : तिरस्कार और दुतकार, इन दोनों में क्या अंतर है?

दादाश्री : दुतकार और तिरस्कार में, तिरस्कार का तो शायद पता भी नहीं चले। दुतकार के आगे तिरस्कार तो बिलकुल माइलड वस्तु है, जब कि दुतकार का स्वरूप तो बहुत ही उग्र है, दुतकार से तो तुरंत लहू निकल आए ऐसा है। देह से लहू नहीं निकलता पर मन का लहू निकले, दुतकार ऐसी भारी वस्तु है।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : तिरस्कार और दुतकार, दोनों के फल कैसे होते हैं?

दादाश्री : तिरस्कार का फल बहुत बड़ा नहीं आता, जब कि दुतकार का फल तो बहुत बड़ा आता है। तिरस्कार तो मनुष्यों को स्वाभाविक रूप से रहता ही है। जिसे राग होता है उसे द्वेष होता ही है। द्वेष माने तिरस्कार। जो आलू नहीं खाता हो उसे आलू के प्रति तिरस्कार रहा करता है। देखते ही तिरस्कार होता है। जहाँ त्याग किया हो वहाँ तिरस्कार बरते। जब कि दुतकार तो बहुत बुरी वस्तु है। तलवार से देह जखमी होता है लेकिन दुतकार तो मन को जखमी करती है। दुतकार सामनेवाले के सारे द्वार बंद कर देती है। जिसको हमने दुतकारा हो न, वह अपने (दिल का) दरवाजा कभी नहीं खोलता। वह क्या कहेगा, 'सब को जाने दूँगा पर तुझे नहीं जाने दूँगा।' हमारी दुतकार की उससे क्षमा माँग लें तो वह सब उड़ जाये।

आपकी मधर से आप कहें कि, 'तू कमअक्रल है, ऐसी है, वैसी है, तुझे खाना तक पकाना नहीं आता।' यह सब तिरस्कार कहलाये। पर उसे ऐसा कहें कि, 'तू मेरे बाप की बहु लगती है।' तो उसे दुतकार लगे। यह दुतकार तो उसे ऐसी लगे कि उसके मन के अंदर से लहू बहता रहे। अब इसमें हमने कुछ गलत तो नहीं कहा है? क्या वह आपके बाप की बहु नहीं लगती? बात नितान्त सही है पर वह व्यावहारिक वस्तु नहीं है। वह सत्य है मगर नग्न सत्य है। ऐसा नहीं चलता। वहाँ व्यावहारिक सत्य चाहिए। व्यावहारिक सत्य कैसा होता है? कि सत्य होने के साथ-साथ सामनेवाले को प्रिय लगे ऐसा होता है। सामनेवाले को हितकर होता है। सामनेवाले को अहितकर सत्य वह सत्य नहीं है। और सत्य मित होना चाहिए, थोड़े शब्दों में हो। रेडियो की तरह गाता ही नहीं रहे। यानी सत्य जो हित-मित-प्रिय हो उसका नाम सत्य, शेष अन्य सभी असत्य है।

पर ये सारी नासमझी की दुतकार कहलाये। जब कि वह तो समझदारी की दुतकार, उससे तो सारा मन कट जाये। समझदारी के साथ दुतकार करें न तो मन के दो टुकड़े ही हो जाये। ऐसी तरह तरह की दुतकार होती है और फिर जगत् में सुखी होने की इच्छा रखते हैं। फिर कैसे सुखी हो सकते हैं?

वह किसे दुतकारता है? उस सामनेवाले मनुष्य को नहीं दुतकारता, (उसके भीतरवाले) भगवान को दुतकारता है। यानी आप यहाँ जो-जो करें, जो-जो गालियाँ देंगे, वह उस भगवान को ही पहुँचती हैं। मनुष्य को नहीं पहुँचती।

जिससे घाव लगे, उससे ही भरे

किसी को भी ज़रा-सी दुतकार न लगे ऐसा हमारा जीवन होना चाहिए। आप दुतकार को पहचानते हैं कि नहीं पहचानते? बड़ी पहचान है? अच्छी तरह की? किसी को लग जाती है सही?

प्रश्नकर्ता : अंदर में सूक्ष्म रूप से लग जाये।

दादाश्री : सूक्ष्म रूप से लगे उसमें हर्ज नहीं है, सूक्ष्म तो हमारे लिए नुकसानदेह है। यद्यपि सामनेवाले को भी विरोधकर्ता तो है ही, क्योंकि सामनेवाला हमारे साथ एकता का अनुभव नहीं करेगा।

प्रश्नकर्ता : मान लीजिये कि कभी स्थूल दुतकार लग जाती है तो भी प्रतिक्रमण तुरंत हो जाता है।

दादाश्री : हाँ, दुतकारने के बाद प्रतिक्रमण करना और उसके साथ मीठी जबान में बात कर के उसमें परिवर्तन ला देना।

प्रश्नकर्ता : तिरस्कार और दुतकार का अनुभव जीवन व्यवहार में हर पल होता रहता है।

दादाश्री : हाँ, हरएक के साथ यही हो रहा है न? जगत् में दुःख उसी के ही हैं। उलटी वाणी ऐसी तो निकले कि न पूछो बात, 'अकाल हो' ऐसा बोले।

दादावाणी

प्रश्नकर्ता : उलटी वाणी के तो आज सम्राट होते हैं।

दादाश्री : हमें पिछले जनमों की झाँकी भीतर दिखाई देती है तब अजूबा लगता है कि अहह! दुतकार का कितना बड़ा नुकसान है! इसलिए मज़दूरों को भी दुतकार न लगे उस प्रकार बरतते हैं। क्योंकि दुतकार बदला लिए बगैर छोड़ती नहीं है, आखिर साँप होकर भी डंक मारे।

प्रश्नकर्ता : क्या उपाय करना कि जिससे दुतकार के परिणामों को भुगतने का वक्त नहीं आए?

दादाश्री : उसके लिए दूसरा कोई उपाय नहीं है, प्रतिक्रमण करते रहना। जब तक सामनेवाले का मन अपनी तरफ लौटे तब तक प्रतिक्रमण करते रहना। और प्रत्यक्ष रूप से मिलने पर फिर मीठा बोलकर क्षमा माँगना कि, 'भैया, मेरी बड़ी भूल हो गई। मैं मूर्ख जो ठहरा, थोड़ा कमअक्रल हूँ।' ऐसा बोलने पर सामनेवाले के घाव भरते जायें। हम अपने आपको बुरा-भला कहें ताकि सामनेवाले को अच्छा लगे, तब उनके घाव भरें।

प्रश्नकर्ता : पैरों पड़कर भी माफ़ी माँग लेना?

दादाश्री : नहीं, पैरों पड़े तो गुनाह बनता है। ऐसा नहीं करना। दूसरे तरीके से, वाणी से पलटिये। वाणी से घाव पड़े हों तो वाणी से उपचार कीजिये। पैरों पड़ने पर तो वह मन में उलटा अर्थ निकाले। उलटी खोपड़ी उलटा माने। इसलिए उसे वाणी से ही पलटिये, ताकि बेचारे को संतोष हो जाये। मीठी वाणी से ही उसे ऐसा पलटिये कि फिर राह पर आ जाये। फिर वह (उसका अहंकार) हस्ताक्षर कर देगा तुरंत। अभी हुआ और अभी ही हस्ताक्षर कर देगा ताकि उसके साथ हमारी एकता बनी रहे। मुझे कई तरह के लोग मिलते हैं पर मैं उनके साथ एकता नहीं टूटने देता।

प्रश्नकर्ता : यह तो आश्चर्य की बात!

दादाश्री : मैं बेचारे की एकता टूटने नहीं देता।

एकता टूटने पर फिर उसकी शक्ति नहीं रहे। जब तक मेरी एकता है तब तक उसकी शक्ति है, इसलिए सँभालना पड़े। हम जिस प्रयोगशाला में बैठे हैं, वहाँ होते प्रयोगों आदि का ख्याल रखना पड़े न?

विचारों को करे निर्माल्य, प्रतिक्रमण से

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण कर्मफल के करने हैं या सूक्ष्म के करने हैं?

दादाश्री : सूक्ष्म के होते हैं।

प्रश्नकर्ता : विचार के या भाव के?

दादाश्री : भाव के। विचार के पीछे भाव होता ही है। अतिक्रमण हुआ तो प्रतिक्रमण होना ही चाहिए। मन से अतिक्रमण हो जाये, मन में खराब विचार आया, इस बहन के लिए बुरा विचार आया यानी 'विचार अच्छा होना चाहिए' ऐसा कहकर विचार बदल देना। मन में ऐसा लगा कि 'यह नालायक है' तो ऐसा विचार क्यों आया? हमें उसकी लायक्री-नालायक्री देखने का राइट(अधिकार) ही नहीं। और अस्पष्ट रूप से कहना हो तो कहना कि, 'सभी अच्छे हैं।' 'अच्छे हैं' कहने पर आपको कर्म का दोष नहीं लगेगा पर यदि 'बुरा' कहा तो वह अतिक्रमण कहलाये। इसलिए उसका प्रतिक्रमण अवश्य करना पड़े।

यदि फिर से ऐसा विचार आए तो वह भरा हुआ माल है, उसके विचार आते रहें। जैसा स्टॉक रहा वैसा माल निकलता रहेगा। और एक मनुष्य को किसी प्रकार की समझदारी नहीं है पर उसके मन में ऐसा हो कि, 'मैं बहुत सयाना हूँ।' ऐसा स्टॉक किया हुआ है। मगर वह स्टोक उसका कोई नुकसान नहीं करता। इसलिए उसे प्रतिक्रमण करने की ज़रूरत नहीं है।

विचार आयेंगे सही मगर उन्हें निर्माल्य कर डालना। प्रतिक्रमण कर डालना। विचार निर्जीव है।

प्रतिक्रमण शुद्धात्मा को कैसे पहुँचाना? 'देहधारी चंदुभाई, चंदुभाई के नाम की सर्व माया, चंदुभाई के मन-वचन-काया का योग, भावकर्म, द्रव्यकर्म, नोकर्म

दादावाणी

से भिन्न ऐसे, हे प्रकट शुद्धात्मा! आपके लिए मुझे यह विचार आया उसके लिए मैं आपकी क्षमा माँगता हूँ और प्रतिक्रमण करता हूँ। अब फिर से ऐसा नहीं करूँगा।

बिना गाँठ पड़े विचार ही नहीं आता। जैसे ही विचार आया कि तुरंत प्रतिक्रमण अवश्य करना। यानी इकट्ठा प्रतिक्रमण करना। इन दस मिनटों में जितने भी विचार आए हैं, उन सभी का मैं एक साथ प्रतिक्रमण करता हूँ।

प्रतिष्ठित आत्मा से नहीं लेना-देना

ये सारे हमारे ही परिणाम हैं। आज से किसी के लिए किंचित्मात्र विचार करना बंद कर दीजिये। हमें आज से किसी के लिए स्पंदन करना नहीं है। विचार आने पर प्रतिक्रमण करके धो डालना। यानी सारा दिन किसी के लिए बिना स्पंदन के गया। ऐसे दिन गुजरा तो बहुत हो गया, वही पुरुषार्थ है।

हम सामनेवाले के कौन-से आत्मा की बात करते हैं? प्रतिक्रमण करते हैं वह किसे करते हैं, यह जानते हैं? प्रतिष्ठित आत्मा को नहीं करते, हम उसके मूल आत्मा को करते हैं। यह तो शुद्धात्मा की हाजिरी में यह इसके साथ जो कुछ हो गया, इसके लिए हम प्रतिक्रमण करते हैं। यानी उस शुद्धात्मा के पास हम क्षमा माँगते हैं। फिर उसके प्रतिष्ठित आत्मा के साथ हमें लेना-देना नहीं है।

अलग-अलग हो वही सही

जैसे-जैसे सारे दोष दिखाई देंगे, वैसे वैसे प्रतिक्रमण होते जायेंगे। तब उतने छूट गये। आपके जितने प्रतिक्रमण हो गये उतना छुटकारा हो गया। जितने बाकी रहे, उतने दोष रहे। उसके फिर प्रतिक्रमण करते ही रहना।

प्रश्नकर्ता : हम सारे जगत् के जीवों की क्षमा माँग लें तो प्रतिक्रमण हो गया कहलाये न?

दादाश्री : प्रतिक्रमण तो कब हुआ कहलाये कि जब अलग-अलग किया जाये तब।

प्रश्नकर्ता : हमने ज्ञान से पहले जो कर्म किये हैं अब इसका लेखा-जोखा निकालने बैठें हैं कि यह किया है। अब वह स्मृति में कब आयेगा?

दादाश्री : वह याद आए तो प्रतिक्रमण करना। जितना याद आए उतने प्रतिक्रमण करना। वर्ना फिर हम यहाँ सामायिक करवाते हैं, उस दिन बैठना। उस दिन पूरा एक्झेक्ट करना, उस दिन धुल जायेगा थोड़ा। ऐसा करते-करते पूरा का पूरा धुल जायेगा।

अवर्णवाद - परोक्ष या मरे हुआ का

प्रश्नकर्ता : 'हे दादा भगवान! मुझे किसी देहधारी जीवात्मा का, प्रत्यक्ष अगर परोक्ष, जीवित या मरे हुआ का, किसी का किंचित्मात्र भी अवर्णवाद, अपराध, अविनय न किया जाये, न करवाया जाये कि कर्ता के प्रति न अनुमोदन हो ऐसी परम शक्ति दीजिये।' (नौ कलमें)

इसमें मरे हुआ का भी हम जो क्षमापना करते हैं, हम जो संबोधन करते हैं, वह उनको पहुँचे सही?

दादाश्री : उन्हें पहुँचाना नहीं है। वह आदमी मर गया है और इस समय आप उनका नाम लेकर गालियाँ दें तो आप भयंकर दोष में पड़ते हैं। इसमें ऐसा कहना चाहते हैं। इसलिए हम मना करते हैं कि मरे हुआ का नाम तक नहीं लेना। बाकी पहुँचाने - नहीं पहुँचाने का सवाल नहीं है। बुरा आदमी हो और सब उलटा कर के मर गया हो पर बाद में उसकी बदगोई मत करना।

आज रावण की बुराई नहीं कर सकते, क्योंकि अभी वह देहधारी है (दूसरे जनम में)। इसलिए उसे फोन (स्पंदन) पहुँच जाये। 'रावण ऐसा था और वैसा था' बोलने पर उसे पहुँच जाये।

हमारे कोई सगेसंबंधी मर गये हों और लोग उसकी निंदा करते हों तो हमें उसमें शामिल नहीं होना

दादावाणी

है। यदि शामिल हो जायें तो बाद में उसका पछतावा करना कि ऐसा नहीं होना चाहिए। किसी भी मृत व्यक्ति के बारे में बातें करना, वह भयंकर गुनाह है। जो मर गया हो उसे भी हमारे लोग नहीं छोड़ते हैं। ऐसा करते हैं कि नहीं करते लोग? यानी ऐसा नहीं होना चाहिए, ऐसा हम कहना चाहते हैं। उसमें जोखिम है, बहुत बड़ा जोखिम है।

ऐसे समय पर पहले के 'ओपिनियन' (अभिप्राय) के कारण ऐसा बोला जाये, तो यह कलम बोलने पर ऐसी बात बोली जाये, तो दोष नहीं लगता।

मृत व्यक्तियों के प्रतिक्रमण

प्रश्नकर्ता : जिसकी क्षमापना करनी है उस व्यक्ति का देहविलय हो गया हो तो क्या करना?

दादाश्री : देहविलय हो गया हो तो भी हमारे पास उसकी फोटो हो, उसका चेहरा याद हो तो कर सकते हैं। चेहरा याद नहीं हो और नाम का पता हो तो नाम लेकर भी कर सकते हैं, तो भी उसे पहुँच जाये सब।

जिस व्यक्ति के साथ हमें उलझनें हो गई हों और वह मर गया हो, तो उसे याद करके उलझनों को धो डालना। जिससे शुद्धि होकर निपटारा हो जाये और उलझनें सुलझ जायें। आलोचना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान करके उलझनें सुलझा देना। क्योंकि स्मृति मृतकों की भी आती है और जीवितों की भी आती है। जिसकी स्मृति हो उसका प्रतिक्रमण करना पड़े। क्योंकि हम जानते हैं कि हकीकत में 'वह' जीवित ही है, मरता नहीं। इससे उसका आत्मा का भी हित है और हम प्रतिक्रमण करें तो हम उसकी उलझनों से छूट जायें।

ऐसा है न, यह सौ रूपयों के कप-रकाबियाँ हैं, वे जब तक हमारा हिसाब है, ऋणानुबंध है तब तक बने रहेंगे। पर हिसाब पूरा होते ही रकाबी टूट जायेगी। वह टूट गई वह व्यवस्थित, फिर उसे याद

करना नहीं होता। और यह मनुष्यों भी कप-रकाबी की तरह ही है न? यह तो दिखाई देता है कि मर गये पर मरते नहीं है, फिर से यहीं आते हैं। इसलिए तो हम मृतकों के प्रतिक्रमण करें तो उन्हें पहुँचे, वे जहाँ हों वहाँ उन्हें पहुँचे।

प्रश्नकर्ता : यानी मृतक व्यक्ति के लिए प्रतिक्रमण कैसे करना?

दादाश्री : मन-वचन-काया, भावकर्म, द्रव्यकर्म, नोकर्म, मृतक का नाम तथा उसके नाम की सर्व माया से अलग ऐसे उसके शुद्धात्मा को याद करना और फिर 'ऐसी भूलें की थी' उन्हें याद करना (आलोचना), इन भूलों के लिए मुझे पश्चाताप होता है इसके लिए मुझे क्षमा करें (प्रतिक्रमण), ऐसी भूलें नहीं हो ऐसा दृढ निश्चय करता हूँ, ऐसा तय करना (प्रत्याख्यान)। 'हम' खुद चंदुभाई के ज्ञाता-द्रष्टा रहें और जानें कि चंदुभाई ने कितने प्रतिक्रमण किये, कितने सुंदर किये और कितनी बार किये।

प्रतिक्रमण छुड़ाये ऋणानुबंध

प्रश्नकर्ता : पूर्वजन्म के ऋणानुबंध से छूटने के लिए क्या करना चाहिए?

दादाश्री : हमें जिसके साथ पूर्व का ऋणानुबंध हो और वह हमें पसंद ही नहीं हो, उसका सहवास ही अच्छा नहीं लगता हो और अनिवार्य रूप से सहवास करना पड़ता हो, तो क्या करना चाहिए कि उसके साथ बाहरी व्यवहार अवश्य रखना चाहिए पर अंदर से उसके नाम के प्रतिक्रमण करने चाहिए। क्योंकि हमने पिछले जनम में अतिक्रमण किया था इसका यह परिणाम है। कोझिझ क्या किये थे? तो कहें कि पूर्वभव में उसके साथ अतिक्रमण किया था, उसका फल इस भव में आया है। इसलिए उसका प्रतिक्रमण करने पर उसका प्लस-माइनेस हो जाये। यानी अंदर से आप उसकी माफ़ी माँग लें। बार-बार किसी भी भगवान की साक्षी में, माफ़ी माँगते रहें कि

दादावाणी

मैंने जो दोष किये हों उसकी माफ़ी चाहता हूँ, तो सब समाप्त हो जायेगा। वर्ना फिर क्या होता है, कि उसके प्रति ज्यादा दोषदृष्टि से देखने पर उसके प्रति तिरस्कार बढ़ता जायेगा। किसी पुरुष या स्त्री को बहुत दोषी देख-देख करे ताकि तिरस्कार बढ़े और तिरस्कार के कारण भय लगे। जिसका हमें तिरस्कार होता है उसका हमें भय लगता है। उसे देखते ही घबराहट होने लगे तो समझना कि यह तिरस्कार है। मतलब तिरस्कार छोड़ने के लिए हमें अंदर ही अंदर माफ़ी माँगते रहें। दो ही दिन में तिरस्कार बंद हो जायेगा। उसे जानकारी नहीं है कि आप अंदर ही अंदर उसकी माफ़ी माँगा करते हैं, उसके नाम की। उसके प्रति जो-जो दोष किये हों उसकी भगवान मैं क्षमा चाहता हूँ। यह मेरे ही दोष का परिणाम मुझे मिला है। किसी भी मनुष्य के साथ जो-जो दोष किये हों, उसकी अंदर ही आप भगवान के पास माफ़ी माँगते रहें, तो सब धुल जायेगा।

साधु-साध्वियों का प्रतिक्रमण

फिर यह भव, गत भव, गत संख्यात भव, गत असंख्यात भवों में, गत अनंत भवों में किसी भी धर्म की, साधु, आचार्यों की जो जो अशातना, विराधना की-कराई हो, उसके लिए दादा भगवान की साक्षी में क्षमा चाहता हूँ। आगे किंचित्मात्र अपराध नहीं हो ऐसी शक्ति देना।

अति संक्षिप्त और पद्धति अनुसार प्रतिक्रमण

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण की क्रिया समझाइये। कई ऐसा कहते हैं कि 'मैंने दो सौ प्रतिक्रमण किये' तो वे कैसे करते हैं?

दादाश्री : ऐसा है न, जितना गहराई में उतरता जाये, उतने खुद के अधिक दोष दिखाई देते जायें।

प्रश्नकर्ता : मुझे तो मेरे ही दोष दिखाई देते हैं।

दादाश्री : वह तो अब ज्ञान दिया है इसलिए वर्ना पहले कहाँ दिखाई देता था? अब दिखाई देते हैं

न? अब दिखाई देंगे। जो दिखाई दिया उसकी माफ़ी माँगनी पड़े। उनके प्रतिक्रमण करने लगे ताकि दोष दिखाई देने लगे फिर। यानी किसी को रोजाना पच्चीस दोष दिखाई दें, किसी को पचास दिखाई दें, किसी को सौ दिखाई दें। पाँचसौ-पाँचसौ दोष दिखाई दें, ऐसी दृष्टि खिल जाये, दर्शन खुलता जाये।

आपके साथ बातचीत करते समय कड़ाई से बात करे लेकिन साथ-साथ उसे दोष भी दिखाई दे कि यह गलत हो रहा है। तुझे दिखाई देता है कि नहीं दिखाई देता?

प्रश्नकर्ता : हाँजी, मुझे मेरे दोष दिखाई देते हैं।

दादाश्री : फिर तो कल्याण ही हो गया। प्रतिक्रमण तो हमारे महात्मा कैसा करते हैं? 'शूट ऑन साइट' प्रतिक्रमण करते हैं। ताकि फिर दोष ही खड़ा नहीं होवे।

प्रश्नकर्ता : हम प्रतिक्रमण करें तब प्रतिक्रमण की जो लम्बी विधि है वह पूरी बोलें कि संक्षिप्त में भाव से करें?

दादाश्री : भाव से संक्षिप्त में ही करना। द्रव्यकर्म, भावकर्म, नोकर्म तो हम लिखते हैं उतना ही है, उसे संक्षिप्त में करें तो भी चलता है।

प्रश्नकर्ता : तो दादाजी, संक्षिप्त में प्रतिक्रमण कैसे करना?

दादाश्री : यह हुआ सो ठीक नहीं है ऐसा हमें लगना चाहिए।

प्रश्नकर्ता : हाँ जी, मगर अति संक्षिप्त रूप से करना हो तो क्या बोलना चाहिए?

दादाश्री : दादा भगवान की साक्षी में, यह जो दोष हुआ है उसकी क्षमा चाहता हूँ। अब फिर से ऐसा नहीं करूँगा, बस इतना ही। वही अति संक्षिप्त प्रतिक्रमण। उसके मन-वचन-काया और भावकर्म, द्रव्यकर्म, नोकर्म ऐसा सब बोलने की कोई ज़रूरत

नहीं है। वह सब तो नये लोगों को सिखलाने के लिए हैं।

यदि किसी मनुष्य के साथ बैर हो तो यह पध्धति अनुसार प्रतिक्रमण करना पड़े। जहाँ बैर हो वहाँ पर पहुँचाने के लिए, ताकि बैर छूट जाये। ऐसा पध्धति अनुसार, पूरा ब्यौरैवार बोलते रहने पर, सभी का बैर छूटता जाये। और साथ-साथ सामनेवाले को भी पता चले कि अब मेरा मन उसके प्रति अच्छा होने लगा है। प्रतिक्रमण तो कितनी बड़ी जबरदस्त शक्ति है!

प्रश्नकर्ता : दोषों के लिए हम बोलें कि यह भव, संख्यात भव, असंख्यात भव से जो वाणी के दोष हुए हों, राग-द्वेष के, कषाय संबंधी दोष हुए हों, वह सब बोलना क्या?

दादाश्री : हाँ, वह सब बोलना चाहिए। दूसरे लोगों के साथ हो तो ऐसे ही कर सकते हैं, क्षमा माँग लें, पछतावा कर लें, तो चल सके।

वह बनके रहे भगवान

कई सालों से यह नीरुबहन प्रतिदिन पाँच सौ-पाँच सौ प्रतिक्रमण करती है। इसलिए आज उसका हल आने लगा है। और कुछ करना नहीं है। यह आज ही लेना है और 'शूट ऑन साईट' प्रतिक्रमण करते रहना है। यहाँ कोई आया और हमारे मन में ऐसा हो कि इतनी भीड़ में यह कहाँ आ टपके? ऐसा कहकर हमने उनके प्रति विराधना की, इसलिए उसके आत्मा ने यह सब जान लिया। यानी हमें तुरंत कहना पड़े कि, 'चंदुभाई, ऐसी भावना क्यों की ? अतिक्रमण किया, अब इसका प्रतिक्रमण किजिये।'

यह प्रतिक्रमण का मार्ग है। आलोचना-प्रतिक्रमण-प्रत्याख्यान, 'शूट ऑन साईट' का मार्ग है। रोज़ाना तीन सौ-तीन सौ भूलें, चार सौ-चार सौ भूलें दिखाई देगी। खुद की एक ही भूल जिसे दिखाई दे वह भगवान होता है। यदि मनुष्य में दोष नहीं होते

तो आज सब जगह भगवान ही होते। जो मनुष्य दोष रहित हुआ, वह भगवान कहलाये!

आपका काम निकल गया समझो। अभी तो जैसे जैसे शक्ति बढ़ेगी, वैसे दोष दिखाई देते जायेंगे। आज स्थूल दोष दिखेंगे, फिर सूक्ष्म दिखेंगे। जितने दिखाई दिये उतने गये। मान लीजिये कि जैसे हम सो गये हैं और कोई चोर घुस आया और हम जाग पड़े तो? चोर भागने की तैयारी करे, हमारे जागने के कारण। वैसे हमारे (भीतर में) जागते ही तुरंत ये दोष भी भागने की तैयारी करे।

जल्दी निपटारा, प्रतिक्रमण से

प्रश्नकर्ता : आपके पास आने के लिए बहुत सोचते हैं पर आ नहीं पाते, ऐसा क्यों?

दादाश्री : आपके हाथों में कौन-सी सत्ता है? फिर भी आने को सोचें पर आया नहीं जाता इसके लिए रंज रहना चाहिए। हम चंदुभाई से कहें कि प्रतिक्रमण किजिये, ताकि जल्दी निपटारा हो। नहीं जा पाते इसका प्रतिक्रमण कीजिये, प्रत्याख्यान कीजिये कि ऐसी भूलचूक होती है वो फिर से नहीं करूँगा।

आज जो भाव होते हैं, वे क्यों अधिक मात्रा में आते हैं और कार्य नहीं हो पाता? ऐसे भाव क्यों आते हैं? क्योंकि 'कमिंग इवेन्ट्स कास्ट धेर शेडोइ बीफोर' (जो होनी है उसकी परछायाँ पहले दिखाई देती हैं)।

प्रश्नकर्ता : हम 'बहुत ठंड है, बहुत ठंड है' ऐसा कुदरत के विरुद्ध में बोलें तो उसका प्रतिक्रमण करना क्या?

दादाश्री : नहीं। प्रतिक्रमण तो जहाँ पर राग-द्वेष होता हो, 'फाइल' हो वहाँ करना। कढ़ी में नमक ज्यादा हो उसका प्रतिक्रमण मत करना पर जिसने नमक ज्यादा डाल दिया उसका प्रतिक्रमण कर लेना। प्रतिक्रमण से सामनेवाले की परिणति बदलती है।

पढ़ते समय पुस्तक को नमस्कार करके कहना

दादावाणी

कि, 'दादाजी, हमें पढ़ने की शक्ति दीजिये।' और यदि कभी भूल जायें तो उपाय करना। दो बार नमस्कार करना और कहना कि, 'दादा भगवान, मेरी इच्छा नहीं, है फिर भी भूल गया इसकी माफ़ी माँगता हूँ, ऐसा फिर से नहीं करूँगा।'!

सूक्ष्मता, ज्ञानी के प्रतिक्रमणों की

पेशाब करने जायें और वहाँ एक चींटी बह गई तो हम प्रतिक्रमण करेंगे, उपयोग नहीं चूकते। बह जाना वह 'डिस्चार्ज' रूप है पर उस वक्त अतिक्रमण दोष क्यों हुआ? जागृति मंद क्यों पड़ गई? उसका दोष लगता है।

समय पर विधि करना भूल गये हों और बाद में याद आने पर प्रतिक्रमण कर के बाद में विधि कर लें।

हम दो व्यक्तियों को अलग करें उसका दोष लगे, इसलिए प्रतिक्रमण कर लें।

प्रश्नकर्ता : आप कर्ताभाव से नहीं करते, तब भी?

दादाश्री : किसी भी भाव से करे लेकिन सामनेवाले को दुःख हो ऐसा किया इसलिए प्रतिक्रमण करना पड़े।

डिस्चार्ज में जो अतिक्रमण हुए होते हैं उनके हम प्रतिक्रमण करते हैं। सामनेवाले को दुःख पहुँचाये ऐसे 'डिस्चार्ज' के प्रतिक्रमण करना। यहाँ महात्माओं का या दादाजी का भला किया उसका प्रतिक्रमण नहीं होता। पर बाहर किसी का भला किया उसका प्रतिक्रमण करना पड़े, क्योंकि उपयोग चूके उसका प्रतिक्रमण करना पड़े।

हमने ऐसे किया निवारण विश्व से

हमें तो अब चंदुभाई के जितने भी दोष हैं वे दिखाई देंगे। यदि दोष दिखाई नहीं दें तो यह ज्ञान किस काम का? इसलिए ज्ञानी पुरुष कृपालुदेव ने क्या कहा था?

“मैं तो दोष अनंत का भाजन हूँ करूणामय, दिसत नहीं निज दोष तो, तरीये कौन उपाय!”

मतलब खुद के दोष दिखाई दे। दोष हैं उस में कोई आपत्ति नहीं है। यानी किसी में पच्चीस होते हैं, किसी में सौ होंगे, हमारे दो होते हैं। उनकी कोई क्रिमत नहीं है। उपयोग ही रखना है। उपयोग रहा कि दोष दिखाई दें, और कुछ नहीं करना है।

'चंदुभाई' से आपको इतना कहना पड़े कि प्रतिक्रमण किया करो। आपके घर के सभी लोगों के साथ, आपको कुछ न कुछ दुःख पहले हुआ हो उसके प्रतिक्रमण आपको करने हैं। संख्यात कि असंख्यात भवों में जो राग-द्वेष, विषय, कषाय से दोष किये हों उसकी क्षमा चाहता हूँ। ऐसा प्रतिदिन एक-एक व्यक्ति के लिए, घर के प्रत्येक मनुष्य को लेकर करना, फिर इर्द-गिर्द के, अडोसी-पडोसी सब को लेकर उपयोग देकर यह किया करना चाहिए। आप ऐसा करेंगे बाद में आपका बोझ हलका हो जायेगा। बिना कुछ किये हलका नहीं होगा। हमने सारे जगत् के साथ ऐसे निवारण किया था। पहले ऐसे निवारण किया था, तभी तो यह छुटकारा हुआ। जब तक हमारा दोष आपके मन में है, तब तक मुझे चैन नहीं लेने देगा। इसलिए हम जब ऐसे प्रतिक्रमण करें तब वहाँ पर धुल जाये। मतलब आलोचना मेरी रूबरू में नहीं करना, पर आप शुद्धात्मा हैं इसलिए उस समय आपके शुद्धात्मा की रूबरू में चंदुभाई आलोचना करे। चंदुभाई से कहे, आलोचना कर लो, फिर एक-एक घंटे प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान करवाना। घर के प्रत्येक मनुष्य का करवाइये। जिनके साथ संबंध हो उनके भी करने पड़े।

अज्ञान दशा में प्रतिक्रमण हो सके?

प्रश्नकर्ता : हमारा यह प्रतिक्रमण केवल महात्माओं के लिए ही है कि जिन्होंने ज्ञान नहीं लिया है उनके लिए भी है?

दादाश्री : ऐसा है न, कि जिन्होंने ज्ञान नहीं

दादावाणी

लिया उनके लिए भी यह प्रतिक्रमण है तो सही, मगर केवल शाब्दिक रूप में ही रहता है। क्योंकि अन्य लोगों को प्रतिक्रमण कैसे रहेगा? उन्हें जागृति नहीं होती। बिना जागृति कैसे रह पाये?

ऐसी जागृति किस काल में थी? ऋषभदेव भगवान के जाने के बाद बाईस तीर्थंकरों के समय 'शूट ऑन साइट' प्रतिक्रमण किया करते थे।

जब हम ज्ञान प्रदान करें, तब उसकी जागृति होती है, वर्ना जागृति संभव नहीं है। वे तो खुली आँख सो रहे हैं ऐसा शास्त्रकारों ने कहा था।

प्रश्नकर्ता : जिन्हें ज्ञान नहीं है, वे कुछ ही प्रकार के दोष देख पायें?

दादाश्री : बस उतना ही, दोष के लिए माफ़ी माँगना सिखें ऐसा संक्षिप्त में बता देना। जो दोष तुम्हें दिखाई दे उस दोष की माफ़ी माँगना और वह दोष सही है ऐसा कभी भी मत बोलना, वर्ना डबल हो जायेगा। गलत करने के बाद माफ़ी माँग लो।

प्रश्नकर्ता : जिसने ज्ञान नहीं लिया है, उसे अपनी भूलें दिखाई दें तो वह कैसे प्रतिक्रमण करे?

दादाश्री : ज्ञान नहीं लिया हो लेकिन ऐसे थोड़े जागृत मनुष्य कि जो प्रतिक्रमण को समझते हैं। वे प्रतिक्रमण करें। यानी अन्य लोगों का काम ही नहीं। पर यदि प्रतिक्रमण शब्द का अर्थ पूछे तो उन्हें कहना कि पश्चाताप किया करना।

प्रतिक्रमण की यथार्थता

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण करना हो तो कैसे करना? मन से करना, पढ़कर करना या बोलकर करना?

दादाश्री : मन से ही। मन से करना, बोलकर करना, चाहे कोई भी तरीके से करना कि मेरा उनके प्रति जो दोष हुआ है उसकी क्षमा चाहता हूँ। मतलब

मन में बोलें तो भी चलेगा। किसी के लिए मानसिक अटेक हुआ, उसके लिए प्रतिक्रमण करना।

केवल हमें पुरुषार्थ क्या करना है? हमें निश्चय रखना है कि मुझे किसी का बुरा नहीं करना है। 'हमें अच्छा ही होने देना है, अच्छा ही करना है।' ऐसा करने पर भी उलटा हो जाये तो हम उसके लिए जिम्मेवार नहीं है। उसके लिए भी हमें क्षमा माँगना है कि ऐसा नहीं होना चाहिए। केवल इतना ही पश्चाताप रखना चाहिए कि ऐसा नहीं हो तो अच्छा।

अजागृति के प्रतिक्रमण

प्रश्नकर्ता : मैं जब 'दादा' का नाम लूँ या आरती करूँ, तब भी मन अन्यत्र भटकता रहता है। फिर आरती में कुछ अलग ही गाने लगूँ, और पंक्तियाँ अदल-बदल हो जायें। विचार आए उसमें तन्मयाकार हो जाऊँ और थोड़ी देर के बाद वापस आ जाऊँ फिर से मूल जगह पर (स्व-स्वरूप में), ऐसा हो तो क्या करना?

दादाश्री : ऐसा है न, उसके लिए उस दिन प्रतिक्रमण कर लेना। विचार आए उसमें हर्ज नहीं है। विचार आए तब हम 'चंदुभाई' को देख पायें कि 'चंदुभाई' को विचार आते हैं, ऐसा यदि देख पायें तो हम और 'चंदुलाल', दोनों अलग ही हैं पर उस वक्त ज़रा कच्चे पड़ जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : उस वक्त जागृति ही नहीं रहती।

दादाश्री : इसलिए उसका प्रतिक्रमण कर लेना कि यह जागृति नहीं रही, इसके लिए प्रतिक्रमण करता हूँ। हे दादा भगवान! मुझे क्षमा करना।

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण करने का बड़ी देर के बाद याद आता है कि इस आदमी का प्रतिक्रमण करना था।

दादाश्री : पर याद तो आता है न? सत्संग में ज्यादा बैठने की ज़रूरत है। सब पूछ लेना चाहिए, बारीकी से। विज्ञान है, सब पूछ लेना ज़रूरी है।

आपकी इच्छा के बावजूद नहीं होता क्या?

प्रश्नकर्ता : हाँ, इच्छा तो होती ही है।

दादाश्री : हाँ, इच्छा होने के बावजूद नहीं होता? अरे! प्रेक्टिस नहीं है न? इसके लिए पहले प्रेक्टिस करनी चाहिए। पहले हमें दो, तीन, चार दिन प्रेक्टिस करनी पड़े।

हमें डॉक्टर ने सूचना दी हो कि दाहिने हाथ से आज भोजन मत करना तब भी भोजन करते समय दाहिना हाथ बिच में घुस ही जाता है।

प्रश्नकर्ता : यदि लगातार आपका खयाल रहा तो प्रयत्न करना नहीं पड़ता, साहजिक हो ही जाता है।

दादाश्री : हाँ, यह सब साहजिक रूप से हो जाये ऐसा है। इसमें कुछ करना नहीं पड़ता।

प्रश्नकर्ता : प्रतिक्रमण करता हूँ तब आनंद होता है। पर अभी दिखने चाहिए उतने दोष दिखाई नहीं देते हैं, ऐसा क्यों?

दादाश्री : वे अब दिखाई देंगे, अभी थोड़ी देर लगेगी। वह तो आवरण पतला होगा न, तब दिखाई देगा। अभी तो सब घने आवरण हैं पर वह प्रतिक्रमण करने पर पतला हो जायेगा।

दोष दिखाई देना आसान बात नहीं है। हम तो एकदम से दृष्टि खुली कर दें पर उसकी ऐसी दृष्टि होनी चाहिए कि 'मुझे दोष देखने हैं' तो दिखाई दिया करें। यानी भोजन करते समय थाली में से हाथ तो ऊपर उठाना चाहिए न? कि यों ही भोजन मेरे मुँह में आ जाये, ऐसा कहें तो थोड़े चलेगा? प्रयत्न तो होना ही चाहिए न?

मनुष्य का दोष होना स्वाभाविक है। उससे विमुक्त होने का रास्ता क्या? अकेले 'ज्ञानीपुरुष' ही दिखायें, वह है 'प्रतिक्रमण'।

पंप, प्रतिक्रमण का

हमें पाँच आज्ञा में अधिक रहने जैसा है, और कुछ करने जैसा नहीं है। सुबह उठते ही तय करना कि पाँच आज्ञा में ही रहना है और यदि नहीं रह पायें तो रात को प्रतिक्रमण कर लेना। ताकि दूसरे दिन रह पायें। फिर आगे फॉर्स बढ़ता जायेगा। इसके लिए और कोई 'पंप' नहीं होते। यही 'पंप' है, प्रतिक्रमण का।

प्रश्नकर्ता : हाँजी, प्रतिक्रमण का पंप।

दादाश्री : प्रतिक्रमण का पंप। यानी मैंने क्या कानून बनाया था कि भैया, जितनी आज्ञाएँ आप पाल सकें उतनी पालिये। आप से नहीं पाली जायें तो दादाजी से क्षमा माँग लीजिए कि दादाजी, जितनी पाल सकता हूँ उतनी पालता हूँ, और नहीं पाली जाये वह मेरे वश में कहाँ है? इसलिए आप से क्षमा चाहता हूँ। यानी आपको सारी आज्ञाओं का पालन हो गया। लेकिन धकेलने के इरादे से ऐसा मत करना।

प्रश्नकर्ता : हाँजी, सही है।

दादाश्री : आप से नहीं बन पाये और हार्टिली (दिल से) आप ऐसा करें तो हमारी सारी आज्ञाएँ आप पालते हैं ऐसा मैं स्वीकार लूँगा।

क्योंकि मनुष्य कितना कर सके? जितना बन पाये उतना करे। और शेष जो नहीं हो पाया उसके लिए माफ़ी माँग ले। फिर मैं उसके लिए भगवान को सब बता दूँ कि, 'इसमें इसका क्या कसूर है, आपकी आज्ञा में ही तो हैं। नहीं पाल सके तो वह क्या करे?'

मतलब हमारे यहाँ के सारे कायदे बहुत सुंदर है। प्रतिक्रमण कर लेना चाहिए। वह प्रतिक्रमण ही आपको चोटी तक ले जायेगा, 'टोप' ऊपर!

हमारे पास रास्ते हैं, उन पर रहना ज़रूरी है। टेन्शन (चिंता) रखने की कोई ज़रूरत नहीं है। इसमें कहीं कोई नुकसान नहीं है। राह पर आने की ज़रूरत है। ज्ञान ही पकड़ने की ज़रूरत है।

जय सच्चिदानंद

आत्मज्ञानी पूज्य दीपकभाई के सांनिध्य में अडालज में सत्संग कार्यक्रम

आत्मसाक्षात्कार पाने का भेदज्ञान प्रयोग (ज्ञानविधि)

दि. २६ अगस्त (रविवार) तथा १६ सितम्बर (रविवार) समय : दोपहर ३-३० से ७
 रक्षाबंधन : दि. २८ अगस्त (मंगलवार) समय : सुबह १० से १२ - दर्शन-भक्ति का कार्यक्रम
 जन्माष्टमी : दि. ४ सितम्बर (मंगलवार) समय : रात्रि १० से १२ - भगवान श्रीकृष्ण जन्मोत्सव पर विशेष भक्ति
 पर्यूषण पर्व : दि. ८ सितम्बर से १५ सितम्बर, २००७
 स्थल : त्रिमंदिर संकुल, सीमंधर सीटी, अहमदाबाद-कलोल हाईवे, अडालज. फोन : (०७९) ३९८३०१००

बेंगलूर

दि. ३०-३१ अगस्त (गुरु-शुक्र) तथा १ सितम्बर (शनि), शाम ६ से ८:३० प्रश्नोत्तरी सत्संग
 दि. २ सितम्बर (रवि), शाम ५ से ८:३० - ज्ञानविधि
 स्थल : शिक्षक ओडिटोरियम होल, कावेरी भवन के सामने, के.जी.रोड, बेंगलूर-२. फोन : ९३४१९४८५०९

नई दिल्ली

दि. २७-२८-२९ सितम्बर (गुरु-शुक्र-शनि), हररोज समय : ६ से ८:३० - प्रश्नोत्तरी सत्संग
 दि. ३० सितम्बर (रविवार), समय : ५ से ८:३० - ज्ञानविधि
 स्थल : एम.पी.सी.यु. शाह ऑडिटोरियम, श्री दिल्ली गुजराती समाज मार्ग, सिविल लाइन,
 नई दिल्ली-११००५४. फोन : ०११-६५०७९४९७ / ०९३१००२२३५०

पूज्य नीरूमाँ को देखिये टी.वी. चैनल्स पर...

- भारत ✦ 'दूरदर्शन' (नेशनल) पर सुबह ८-३० से ९ (सोम से शुक्र) 'नई दृष्टि, नई राह'
 इसी समय देखिए, तमिलनाडु में तमिल में... आंध्रप्रदेश में तेलुगु में तथा केरल में मलयालम में...
- ✦ 'Zee Gujarati' पर हररोज सुबह ७ से ७-३० (गुजराती में)
 ✦ 'दूरदर्शन' डीडी-१ प्रतिदिन दोपहर ३-३० से ४ (गुजरात में) (अन्य राज्यों में डीडी ११ पर वही समय)
 ✦ 'आस्था इन्टरनेशनल' प्रतिदिन दोपहर १२-३० से १ (गुजराती में)
- U.S.A. : ✦ 'TV Asia' Everyday 7 to 7-30 AM EST (In Gujarati)
 ✦ 'TV 39 (NJ)' Mon-Fri 6 to 7 PM & Sat 6 PM to 6-30 PM (In Gujarati)
- Canada: ✦ 'ATN' Every Wed-Thu 8-30 to 9 AM EST
- ✦ समग्र विश्व में (भारत के अलावा) सोनी टीवी पर (सोम से शुक्र) सुबह ७ से ७-३०, (हिन्दी में)
 ✦ समग्र विश्व में (भारत के अलावा) 'आस्था इन्टरनेशनल' पर (सोम से शुक्र) सुबह ८ से ८-३०

पूज्य दीपकभाई को देखिये टी.वी. चैनल्स पर...

- भारत ✦ 'दूरदर्शन' डीडी-११ पर प्रतिदिन रात्रि ९ से ९-३० - 'ज्ञानप्रकाश' (गुजराती में)
 ✦ 'आस्था इन्टरनेशनल' पर (सोम से शुक्र) रात्रि ११-३० से १२, (शनि-रवि) दोपहर १-३० से २
- UK-Europe ✦ 'MA TV' पर प्रतिदिन शाम ५ से ५-३०
- UK ✦ 'BSKYB' Satellite Channel 837, Sat 7:30 to 8:30 AM, Sun 7 to 8 AM
- U.S.A. : ✦ 'Sahara One' DishTV Channel 624 & 797, Sat 7:30 to 8:30 AM, Sun 7 to 8 AM EST
- समग्र विश्व में (भारत के अलावा) 'आस्था इन्टरनेशनल' पर (सोम से शुक्र) शाम ६-३० से ७, शनि-रवि रात ८ से ८-३०



डेवलपिंग स्टेज से पूर्ण डेवलपड का थर्मामीटर

टकराव पैदा हो जाये और सामनेवाले को बुरा लगा हो तो प्रतिक्रमण तो अवश्य करना पड़े। टकराव तो होना ही नहीं चाहिए, वह भी आत्मा है और आप भी आत्मा हैं। यह सारा पुद्गल (शरीर) का व्यवहार है, आत्मा का व्यवहार नहीं है। पुद्गल का व्यवहार प्रतिक्रमण से बंद हो जाये। टकराव टाले वह डेवलपिंग कहलाये, और जिसका टकराव समाप्त हो गया हो, वह डेवलपड कहलाये। कोई मुझे भला-बुरा सुनाये फिर भी मेरा किसी से टकराव ही नहीं होता, क्योंकि मैं डेवलपड हुआ हूँ। अगर आपको मोक्ष चाहिए तो टकराव टालिये।

- दादाश्री

